राज
कॉमिक्स
विशेषांक
संख्या 2714
राजनगर
की तबाही
SILVER JUBILEE
25
YEARS
COLLECTOR'S EDITION
RAJ COMICS
राज
कॉमिक्स
BY MANOJ GUPTA

जब कभी भी झगड़े होते हैं, तो तबाह होते हैं परिवार और समाज। जब युद्ध होते हैं तो तबाह होते हैं देश और साम्राज्य! और जब प्रलय होती है तो तबाह हो जाती है पूरी पृथ्वी, तबाह हो जाती है पूरी मानवता। और इस तबाही की शुरुआत होती है एक मैट्रो की तबाही से, जब होती है...

राजनगर की तबाही

कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा, इंकिंग: बिट्ठल कांबले, सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय, संपादक: मनीष गुप्ता

एक साइन यहां पर भी ! ...
... बस ! कानूनी कार्यवाही पूरी हो गई !
बधाई हो, मिस भारती ! अब आप इस कंपनी में 51 प्रतिशत की हिस्सेदार हैं ...
... और अब से इस कंपनी का आधिकारिक रूप से नाम 'भारती-कम्युनिकेशन्स लिमिटेड' है।
थैंक्यू, वकील साहब !
व... वो सब तो हो गया ! पर मेरा पैंतीस करोड़ का चेक कहां है ?
ये रहा आपका चेक मिस्टर पहलेजा ! आज से हम पार्टनर हैं। और आज से कंपनी का मैनेजमेंट हम खुद देखेंगे।
जरूर ! जरूर ! क्यों नहीं ? क्यों नहीं ?
लेकिन अब मुझे जाने की इजाजत दीजिए।
आश्चर्य की बात है ! पहलेजा कुछ तनाव में लग रहा है !
पैंतीस करोड़ का चेक मिलने से भी उसके चेहरे पर मुस्कान की एक लकीर तक नहीं आई। कुछ गड़बड़ लगती है !
पहलेजा के तनाव की वजह साफ थी—
डॉन पाशा का दिया हुआ वक्त कल खत्म हो रहा है ... और यह चेक कैश होने में कम से कम दो दिन तो लगेंगे ही।

खैर ! चेक तो हाथ में आ ही गया है। डॉन पाशा को किसी न किसी तरह से एक और दिन का समय देने को पटा ही लूंगा ।

पहलेजा ने उस नाग को बिल्कुल नहीं देखा, जो चुपचाप उसकी कार में घुस-कर गुम हो रहा था—

और इसी वक्त- राजनगर में—

हक्क ! मैं इस शहर में आ तो गया हूं। लेकिन उस आदमी को कैसे चुनूंगा, जिससे हमारा काम हो सके !

हक्क ! लेकिन आदमी तो मिलेगा ही !

और पास में ही कहीं पर-

तैयार रहना ! धमाका होने के बाद पुलिस के यहां आने तक हमारे पास सिर्फ तीन से चार मिनट होंगे।
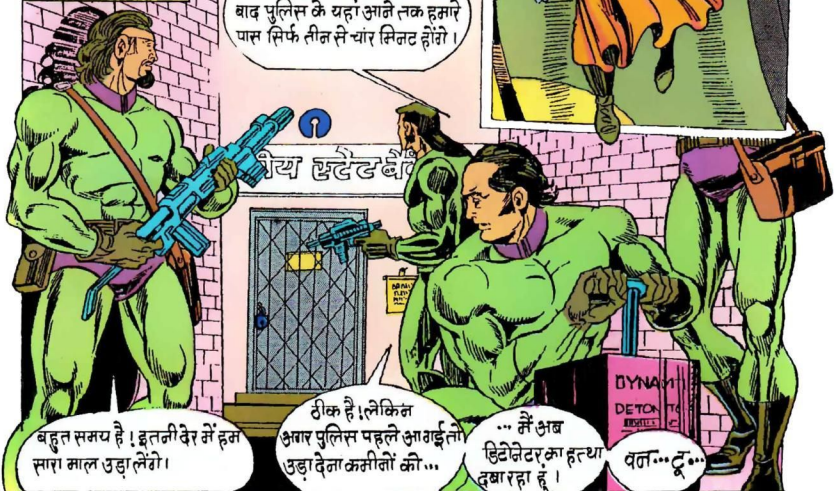
बहुत समय है ! इतनी देर में हम सारा माल उड़ा लेंगे।

ठीक है ! लेकिन अगर पुलिस पहले आ गई तो उड़ा देना कमीनों को...

... मैं अब डिटोनेटर का हत्था दबा रहा हूं ।

वन...टू...

...श्री !
हत्था दबा-
लेकिन धमाका नहीं हो पाया-
स्टार ब्लेड !
खट
इसका तो एक ही मतलब है...
...और वह यह कि यहां पर आ चुका है...
DYNAMITE DETONATOR
राजनगर का रखवाला...
सुपर कमांडो ध्रुव !
इसका एक और मतलब है...
...और वो ये कि तुम लोग सीधे जेल जा रहे हो। मुझे ये बताने के बाद कि तुम लोग किसके आदमी हो ?
तड़ तड़ तड़
?

ताड़
धड़ाक
ओह! यह तो मुझे अपने काम के आदमी लग रहे हैं...
...क्योंकि ये मुझे उस आदमी तक पहुंचा सकते हैं, जिससे मुझे काम है।...
आ
हह
...यह दूसरा प्राणी इनको मेरा काम करने से रोक रहा है...
...मुझे इन लोगों को इसके चंगुल से बचाकर निकालना होगा...

और अगले ही पल– लबादे के अन्दर से एक किरण निकलकर ध्रुव से आ टकराई–

और ध्रुव के चारों तरफ की हवा की पर्तें, अपने अन्दर से होकर गुजर रही प्रकाश की किरणों को विकृत करने लगीं–

ओह! यह क्या?

कौन है ये लबादे वाला आदमी?

प्रकाश की किरणों के विकृत होने से, ध्रुव को दिखने वाले दृश्य भी विकृत होने लगे–

ओह! मुझे कुछ साफ-साफ नहीं दिखाई दे रहा है!

सुना तूने? यही मौका है, इस लड़के का सिर काटकर बॉस से इनाम लेने का!

फिर सोचता क्या है? काम चालू कर दे!

गोली मत मारना! इसको तो हम जानवरों की तरह पीट-पीट-कर मारेंगे।
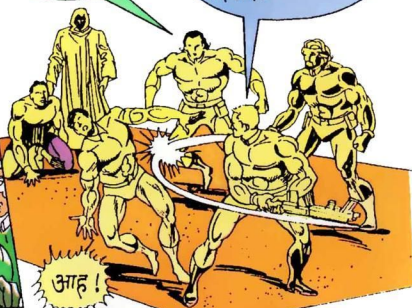
आह!

ओह! मैं इन पर वार करता हूं तो मेरा वार, इधर-उधर से निकल जा रहा है...

...और इनके वार, मेरे बदन पर ऐसे बरस रहे हैं, जैसे बारिश में ओले...
... दृष्टि-भ्रम के कारण मैं अपने वारों को ठीक से कनेक्ट नहीं कर पा रहा हूं ...
... और इसका कारण है यह लबादाधारी !
अगर मैं इसको काबू में कर सकूं तो शायद मेरा दृष्टि-भ्रम दूर हो... अरे ! ...
... मुझे पूरा यकीन है कि इस बार मेरा वार नहीं चूका था ! लेकिन... लेकिन ऐसा लगा जैसे मेरा वार इसके आर-पार हो गया हो ...
... जैसे ये कोई आदमी नहीं, सिर्फ एक परछाईं हो। पर ये कैसे... आऽऽऽह !
ताड़
अब एक ही रास्ता है ! अगर मेरी आंखें मुझे धोखा दे रही हैं तो मैं इनका इस्तेमाल नहीं करूंगा...
... अब मैं अपनी उस ट्रेनिंग का इस्तेमाल करूंगा, जो मुझे जुपिटर सर्कस में दी गई थी...
... अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर उड़ते पक्षी पर निशाना लगाने की !

जरूरत है तो सिर्फ अपनी दूसरी इन्द्रियों की पूरी तरह से जगाने की...
...जैसे सुनने की शक्ति!
हवा में सरसराते शरीर की आवाज सुनो। और वार करो...
धड़ाक
...और सूंघने की शक्ति!
हवा के बहने की दिशा और इन गुंडों के शरीर से आती बदबूदार महक...
...मुझे यह बताने के लिए काफी है कि गुंडे मुझसे कितनी दूर और कहां पर खड़े हैं!

मैंने इन मूर्खों को इस लड़के से इसलिए बचाया था, ताकि ये बचकर भाग सकें, और मुझे अपने नायक के पास ले चलें...
लेकिन ये तो फिर से पिटने में व्यस्त हो गए! अब मुझे ही कुछ करना होगा! वर्ना इतनी देर की मेहनत व्यर्थ हो जाएगी!
इस रूप में मैं ज्यादा कुछ तो नहीं कर सकता! लेकिन वायुमंडल के साथ बहुत कुछ कर सकता हूं...
...जैसे 'गमरेज' की मदद से इस लड़के के चारों तरफ की हवा इतनी गाढ़ी कर सकता हूं...
...कि इस लड़के को ऐसा लगे जैसे वह गोंद के गाढ़े घोल में चल रहा हो!
अगले ही पल- ध्रुव के बिजली से वार, कछुए की चाल जैसे हो गए-
यह क्या?
ऐसा लग रहा है जैसे मैं चाशनी के घोल में चल रहा हूं।
अब तक गुंडे भी तौबा कर चुके थे-
कौन है ये लबादे वाला? बार-बार हमारी मदद क्यों कर रहा है?
मदद कर रहा है तो कौन सा बुरा कर रहा है?
इससे पहले कि ये शैतान की औलाद ध्रुव, इस मुसीबत से भी बच निकलने का रास्ता ढूंढ ले, यहां से भाग लें!
हां, भाग लो! ताकि मैं तुम्हारा पीछा करके अपनी मंजिल तक पहुंच सकूं!

ध्रुव के आंखों पर से बेल्ट उतारने तक मैदान खाली हो चुका था -
भाग गए सब ! वह लबादाधारी भी ! पर वह था कौन ?
जहां तक मैं समझ पाया हूं, वह इन गुंडों के साथ नहीं था। क्योंकि उसने बैंक लूटने की कोई कोशिश नहीं की ... लेकिन वह था कौन ? और इन गुंडों को बचाने की कोशिश क्यों कर रहा था ?
कुछ भी हो, एक बात तो साफ है। उसके जाते ही, हवा में एकाएक आया गाढ़ापन खत्म हो गया है।
इन सवालों के सारे जवाब वहां पर थे -
जहां पर वह रॉकेट, 'भारती कम्युनिकेशन' के उपग्रह से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारी लेकर जा रहा था -
और वह जगह थी- चांद के दूसरी तरफ के अंतरिक्ष में तैरता एक विशाल अंतरिक्ष यान -
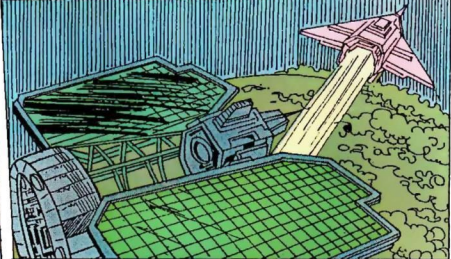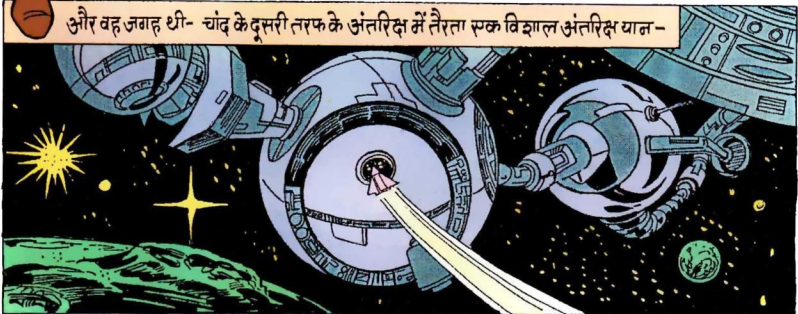
और इसी यान में मौजूद थे- इस षड्यंत्र के सूत्रधार-
खेल शुरू हो चुका है नंबर टू !
अब हम इस ग्रह के प्राणियों के हाथों ही इस ग्रह को जीवन रहित कर देंगे !
'इमेज' ने अपना काम बखूबी निभाया है !
लेकिन आपकी जो योजना है, उसमें काफी समय लग सकता है, नंबर वन !
और कहीं इस दौरान 'क्रूटू' वालों ने हमें ढूंढ लिया तो…
शांत नंबर टू ! हम जानते हैं कि इस वक्त हम अपने प्लून साम्राज्य के जानी दुश्मन क्रूटू साम्राज्य वालों के इलाके में हैं।
और यही कारण है कि हम यहां पर लड़ाकू यान के बजाय ये मामूली सा माल ढोने वाला यान लेकर आए हैं। अगर हम पकड़े भी गए तो व्यापारी होने का बहाना बनाकर बच सकते हैं…
… लेकिन अगर हमने इस ग्रह पर कब्जा कर लिया तो हम यहां से बैठे-बैठे पूरी क्रूटू जाति को नष्ट कर सकते हैं…
… क्योंकि इस ग्रह पर उस घातक द्रव का प्रचुर भंडार है, जिसकी एक बूंद पड़ते ही क्रूटू प्राणियों के शरीर गल जाते हैं…
… और वह द्रव है पानी ! हाइड्रोजन और ऑक्सीजन गैसों का एक घातक मिश्रण !
और उसको पाने के लिए इस ग्रह पर कब्जा करना बहुत जरूरी है…
अगर ऐसा था तो हमको अपने लड़ाकू यान लेकर आना चाहिए था…

जानता है तू नंबर टू क्यों है? क्योंकि तू मूर्ख है। अगर हम इस ग्रह पर हमला करते, तो अब तक क्रूटू हमारा सफाया कर देते!
बात समझ में आ गई नंबर वन : हमला करते ही उनको हमारी उपस्थिति का पता चल जाता!
तड़ाक
लेकिन एक बात मुझे अभी तक समझ में नहीं आई। आपने अपने प्लान की टेस्टिंग के लिए इस राजनगर नाम के शहर को ही क्यों चुना?
कई कारण हैं नंबर टू! एक तो हम इस ग्रह के प्राणियों के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानते लेकिन इतना जरूर जानते हैं कि अगर पृथ्वी-वासियों को हमारी उपस्थिति का पता चल गया तो, उनका विज्ञान हमको नष्ट करने में भी सक्षम है।
वैसे भी इस ग्रह पर असाधारण शक्तियों वाले कई प्राणी हैं जिनसे हमको बचकर रहना है। हमको डर सिर्फ क्रूटू से नहीं, इन प्राणियों से भी है।
लेकिन ये असाधारण प्राणी और उच्च तकनीक का विज्ञान ज्यादातर इस ग्रह के पश्चिमी गोलार्द्ध में हैं। और राजनगर पूर्वी गोलार्द्ध में पड़ता है।...
...पूर्वी गोलार्द्ध के प्राणी हमारा प्रतिरोध नहीं कर पाएंगे...
...और एक बार राजनगर की तबाही का प्रयोग सफल हो गया तो, पश्चिमी गोलार्द्ध को तबाह करने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा!

... और अपनी विभिन्न असर वाली किरणों को, सेटेलाइट के जरिए, पृथ्वी पर डालकर हम ऐसे-ऐसे खौफनाक मंजर पैदा कर सकते हैं, जो राजनगर को तबाह कर देंगे!
हमारे द्वारा राजनगर में भेजी गई 'इमेज' इसी तबाही की योजना की शुरुआत है!
नंबरवन! हमारी 'सर्च-पार्टी' सेटेलाइट की तलाश करके वापस आ गई है।
वाह! उनको तुरन्त अंदर भेजो!
और फिर-
यही है वह सेटेलाइट नंबरवन! हमने चेक किया है...
...इसका सीधा कनैक्शन राजनगर स्थित एक कंट्रोल-स्टेशन से है।
वाह! सारी गुत्थियां सुलझ गईं!
अब तुम लोग देखो नंबर वन का कमाल!
न जाने यह नंबर वन का दुर्भाग्य था...
...या नागराज का कि वह सेटेलाइट 'भारती कम्युनिकेशन लिमिटेड' की थी, जिसका मालिक था... नागराज
तुम्हारे दिमाग की जितनी भी दाद दी जाए, कम है नागराज।
कौन कहता है कि तुम बिजनेसमैन नहीं हो?
राजनगर
100KM

तुमने जिस तरह से पहलेजा को संभाला, वह हर किसी के बस का काम नहीं है। पहलेजा काफी आसानी से मान गया!
इसका कारण कुछ और ही लगता है, भारती!
और क्या कारण हो सकता है?
अभी कुछ पक्का नहीं है भारती! लेकिन पता चलने पर तुमको बताऊंगा जरूर!
ठीक है! ठीक है!
लेकिन फिलहाल इतना तो बता दो कि एकाएक राजनगर जाने का मूड कैसे बन गया?
हमारा हैड ऑफिस महानगर में जरूर है भारती, लेकिन सेटेलाइट का कंट्रोल-स्टेशन तो राजनगर की काली पहाड़ी पर ही स्थित है!
वह तो होगा ही! क्योंकि कंट्रोल-स्टेशन के लिए ऊंचे स्थान की जरूरत होती है। और महानगर में तो पहाड़ियां हैं नहीं!
और वैसे भी महानगर और राजनगर के बीच सिर्फ 410 किलोमीटर का ही तो फासला है।
यह सब मैं जानता हूं भारती! लेकिन मालिक बनने के बाद कम से कम एक बार तो कंट्रोल-स्टेशन को देख ही लेना चाहिए।
ये तो ठीक है! एक बार नजर तो मारनी ही चाहिए!
देखो! वह रहा कंट्रोल-स्टेशन!
दस मिनट में हम वहां पर होंगे!

और उसी वक्त– चांद की आड़ में छिपे अंतरिक्ष यान में–
हमारे इस यान में घातक हथियार न सही, लेकिन अदभुत असर दिखाने वाली बेशुमार किरणों का भंडार जरूर मौजूद है।
जैसे कि ये किरण, जिसका प्रयोग मैं अभी करने जा रहा हूं। सिर्फ टेस्टिंग के तौर पर...
जब ये किरण हमारे यान से निकलकर, उपग्रह से होते हुए राजनगर की धरती से टकराएगी...
... तो यह उन दृश्यों को फिर से जिन्दा कर देगी, जो उस स्थान पर हजारों साल पहले घटित हो चुके हैं...
... यानी फिर से जिन्दा हो उठेगा लाखों साल पहले का पृथ्वीवासी! जिसको आज के पृथ्वीवासी 'प्रगैतिहासिक मानव' कहते हैं...
... जो पत्थर के हथियारों से विशालकाय और खूंखार पशुओं को नष्ट कर देता था...
... लेकिन जब वह आज के युग में पैदा होगा तो उसका कहर टूटेगा...
... राजनगर पर और राजनगर में रहने वाले प्राणियों पर–
यह... यह क्या हो रहा है, नागराज ? गर्मी के मौसम में एकाएक ये धुंध कहां से आ गई ?
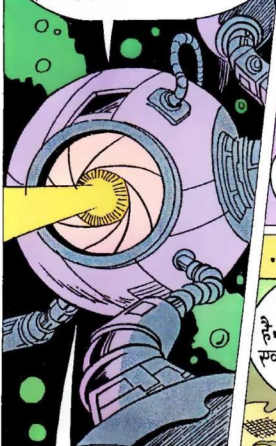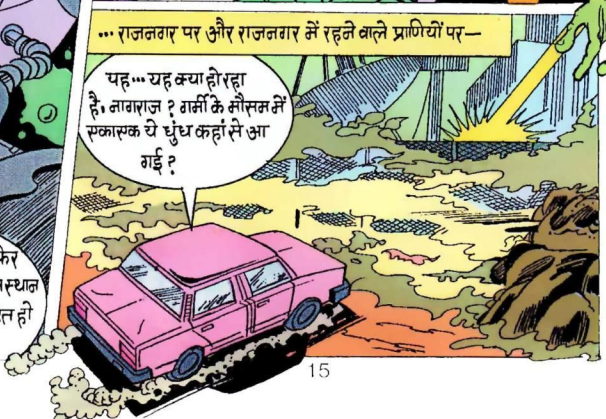
कहानी 19 वें पृष्ठ से जारी

यह क्या हो रहा है, नागराज? कैसे हो रहा है?
पता नहीं भारती! समझ में नहीं आता कि कुछ ही सेकेंडों में हम लगभग पांच लाख साल पीछे कैसे पहुंच सकते हैं?
हाऽऽ हुर्र्र्र्र हर्र्र्र्र
पर... पर अब इनके इरादे क्या हैं?
इरादे तो पता नहीं भारती! लेकिन कम से कम इनके इरादे नेक तो नहीं ही हैं।
नागराज! इनकी तादाद तो बेशुमार है। ये तो गुफा से निकलते ही चले आ रहे हैं।
तुम पीछे ही जाओ भारती! ये हम पर हमला करने के लिए आ रहे हैं।...
...मैं इनको संभालता हूं।

अगले ही पल नागराज की कलाईयों से सर्प छूट चले—
लेकिन आदिमानव, ऐसे जीवों के साथ रहने का अभ्यस्त था...
...क्योंकि सांप-बिच्छू भी उसके भोजन में शामिल थे—
...इनसे दूसरी तरह से निबटना होगा!
ओह! इन्होंने तो सांपों के जहरीले हिस्से को अलग काटकर उसे खाना शुरू कर दिया...
...ऐसे तो ये मेरी पूरी सर्प-सेना का ही विनाश कर देंगे!...
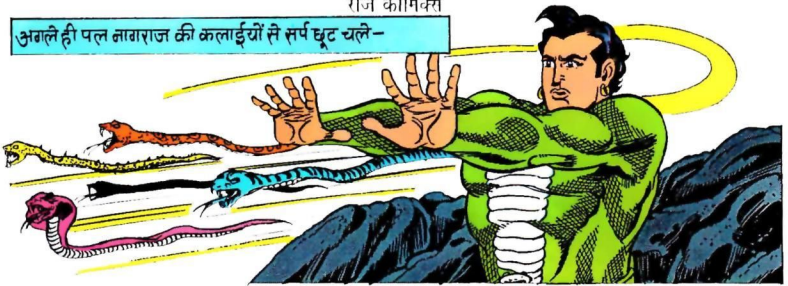
अगले ही पल असंख्य नागों की शक्ति वाले नागराज की शक्तिशाली भुजाएं हवा में लहरा उठीं—

ये तरीका भी ज्यादा समय तक काम नहीं आएगा। क्योंकि एक तो इन आदिमानवों की संख्या बहुत ज्यादा है...

...और दूसरे इनमें शक्ति भी बहुत ज्यादा है। मेरे वार भी इन पर खास असर नहीं कर पा रहे हैं...

...वैसे भी मार-मार कर रोकने में समय ज्यादा लगेगा...

...अब मुझे वह अस्त्र प्रयोग में लाना ही पड़ेगा जो इन सबको एक साथ रोक सकता है...

...और वह है मेरी विष फुंकार!

पहले मैं इसका प्रयोग इसलिए नहीं कर रहा था, क्योंकि इन सबको एक साथ रोकने के लिए जिस मात्रा में विष फुंकार का प्रयोग करना पड़ेगा, उसमें इनकी जान जाने का भी खतरा है!...

...और यह मैं नहीं चाहता था! पर अब मुझे यह रिस्क लेना ही पड़ेगा!

फूऊऊ

नागराज की विष फुंकार ने, उसकी तरफ बढ़ते आदिमानवों को तो रोक लिया था, लेकिन-
नागराज!...
...इधर देखो!...
...बाकी आदिमानव राजनगर की तरफ भाग रहे हैं।
हे देव कालजयी! अगर ये आदिमानव, राजनगर तक पहुंच गए तो तबाही मच जाएगी!
न जाने कितनी जानें चली जाएंगी!
मुझे इनको रोकना होगा!
क्या सोचते हैं नंबर वन?
ये पृथ्वीवासी, इन जंगलियों को रोकने में कामयाब हो जाएगा?
शायद रोक ले...
...लेकिन इसको सिर्फ इन जंगलियों को ही नहीं रोकना है...
...क्योंकि राजनगर में तबाही फैलाने वाले और खूंखार प्राणी भी हैं।...
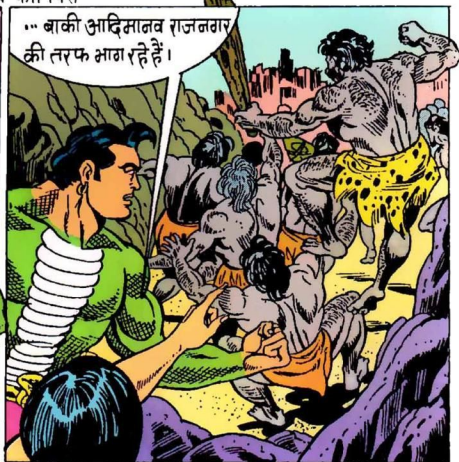
...ऐसे प्राणी जिनका शिकार ये शक्तिशाली और वहशी आदिमानव भी झुंड में ही कर पाता था... खूंखार प्रागैतिहासिक पशु जैसे...
... विशालकाय 'मैमोथ' –
ओह ! ये तो एक प्रागैतिहासिक पशु है, मैमोथ। और ये आदिमानव इससे घबरा कर वापस भाग रहे हैं...
... मुझे सबसे पहले इसी को रोकना होगा ! वर्ना इन आदिमानवों को कुचलने के बाद ये राजनगर में घुसकर भी तबाही मचा सकता है !

इस विशालकाय जीव को खत्म करने के लिए मेरी सर्प सेना और विष फुंकार बेअसर साबित होंगी।
इसको खत्म करने का एक ही तरीका है... और वह यह है कि मैं अपने विषदंत इसके शरीर में गड़ा दूं...
...ताकि इसका शरीर पिघल-कर बह जाए...
...और उसके लिए मुझे इसके बिल्कुल पास पहुंचना...
आह!
और भारी-भरकम पैर उसका मलीदा बनाने के लिए उसकी तरफ बढ़ने लगे —
नागराज, अभी तक संभल नहीं पाया था —
मैमोथ का पैर उस पर गिरा जरूर - एक चीख भी उभरी —
त्रिं या या या या या
मैमोथ के एक ही भीषण वार ने नागराज के पैर जमीन से उखाड़ दिए —
लेकिन यह चीख नागराज की नहीं थी यह मैमोथ की चिंघाड़ थी —
सौडांगी का कांटेदार शरीर नागराज की रक्षा को आ गया था —
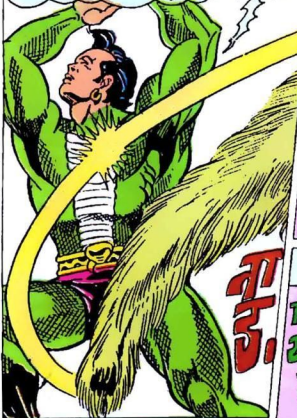
अब मैमोथ, सिर्फ तीन पैरों पर असंतुलित सा खड़ा हुआ था -

अगले ही पल सौडांगी ने उसके अगले पैरों को कसकर जकड़ लिया -

और नागराज का एक भीषण वार, उसको जमीन पर गिराने के लिए काफी था -

अब मैमोथ फुर्ती से खड़ा हो सकने की हालत में नहीं था -

वह क्रोध से चिंघाड़ उठा -

और उसने बिजली की सी फुर्ती से अपनी तरफ बढ़ते नागराज को अपनी बालदार सूंड़ के शिकंजे में कस लिया -

अभी-अभी एक भीषण वार सह चुके नागराज का दिमाग एक बार फिर अंधेरे में डूबने लगा -

आह! इसकी पकड़ मेरे सीने पर दबाव डाल रही है! मेरी सांस रुक रही है! बेहोश होने से पहले जवाबी हमला करना होगा...

सौडांगी! तुम इसके पैर छोड़कर इसकी गर्दन को कस लो...

सौडांगी तुरन्त इशारा समझ गई-

मैमोथ की गर्दन अब सौडांगी के शिकंजे में थी ! वह भी सांस नहीं ले सकता था-

सूंड़ का शिकंजा अपने-आप खुल गया…

…और नागराज के जहर भरे दांत, मैमोथ की खाल में आ गड़े-

घच्प

और अगले ही पल- मैमोथ का शरीर पानी की तरह गलकर बहने लगा-

कई आंखों के लिए यह करिश्मा इतना आश्चर्यजनक था…

?

?

…जिसको कोई भगवान ही कर सकता था-

?

यह पूरा दृश्य किसी और को भी चकित कर रहा था –
यह सब क्या हो रहा है नंबर टू ?
ये जंगली प्राणी राजनगर की तरफ भागते-भागते रुक क्यों गए ?
और ये इस पृथ्वीवासी के सामने झुककर क्या कर रहे हैं ?
इस पृथ्वीवासी का अद्भुत कारनामा देखकर! ये जंगल वासी उसको भगवान समझ बैठे हैं। जिस प्राणी का शिकार ये कई जंगली मिलकर बड़ी मुश्किल से कर पाते हैं, उसको इसने अकेले ही खत्म कर दिया!
वैसे भी, जिस प्रकार इसके शरीर से पतले-पतले प्राणी निकलकर बाहर आ रहे हैं, उससे तो मैं भी चकित हूं।
मैंने पृथ्वीवासियों के बारे में गहन अध्ययन किया है। लेकिन ऐसी शक्ति तो उन पृथ्वीवासियों में नहीं है, जो पश्चिमी गोलार्द्ध में रहते हैं।
अब ये आदिमानव राजनगर पर हमला नहीं करेंगे।
ऐसा है तो इस प्रयोग को यहीं पर खत्म कर दो!
पृथ्वी के पूरे इतिहास का फिर से अध्ययन करो और ऐसे प्राणियों की तलाश करो, जो खूंखार भी हों, और ऐसे छोटे-मोटे चमत्कारों से किसी को भगवान न मान लेते हों।
जो आदेश, नंबर वन!
और फिलहाल इस किरण को बन्द कर दो...

और राजनगर की काली पहाड़ी पर स्थित कंट्रोल स्टेशन के पास–

ये शांत हो गए भारती !

तुम्हारी शक्तियां देखकर ये तुमको अपना भगवान समझ रहे हैं !

ये तो मैं भी समझ रहा था ! लेकिन इनसे ये पता करना बहुत जरूरी है कि आखिर ये आए कहां से ?

सुनो ! मेरी बात ध्यान से...

...अरे ! ये क्या हो रहा है ?

सब कुछ गायब हो रहा है !

देखो नागराज ! कंट्रोल-स्टेशन फिर से वापस आ गया है !

कमाल है ! सब-कुछ वैसे का वैसा हो गया है। जैसे कभी कुछ हुआ ही नहीं था !

लेकिन... लेकिन इन सब घटनाओं का मतलब क्या था ?

मुझे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है, भारती ! पर राजनगर में एक ऐसा शख्स जरूर है, जो शायद कुछ समझ सके...

...और वह है...

सुपर कमांडो ध्रुव-
ओह! रातभर की गश्त के बाद घर आओ, तो ऐसा लगता है जैसे जन्नत मिल गई हो...
...लेकिन बात क्या है? कोई नजर नहीं आ रहा है! न ही मम्मी और न ही...
ओह!
ये तो मर गया...
तड़ तड़ तड़
श्वेता!...
...ये तो श्वेता के चिल्लाने की आवाज है...
घबराना मत श्वेता! मैं आ रहा हूं...
च्यूं च्यूं ढें ढें ढें ढें तड़ तड़ तड़ तड़
...घबरा मत?
ओह!
तो तू फिर 'वीडियोगेम' खेलते-खेलते चिल्ला रही थी! कब जाएगी तेरी ये बचकानी आदत!

आखिर अब तू कॉलेज में आ गई है। किस कॉलेज में तूने एडमीशन लिया है?
अरे कॉलेज की मारो गोली भइया! पता है मैंने 'फायर सिटी' का आठवां घर भी पार कर लिया...
...अभी तक पूरी दुनिया में सिर्फ चौदह लोग ही इस गेम को पार कर पाए हैं...
...और मैं अब पंद्रहवी बन गई हूं!
हे भगवान! अब मुझे फिर से इसकी महानता के बड़े-बड़े बखान सुनने पड़ेंगे। किसी भी रूप में आकर मुझे बचा ले...
...किसी भी रूप में आ जा भगवान।
आ गया! आ गया मुझे बचाने वाला!
डिंग डांग
डिंग डांग
देखलो! देखलो!
जरूर मम्मी बाजार से वापस आई होंगी।
दरवाजा खोलते ही, ध्रुव पलभर के लिए चौंक गया—
किससे मिलना चाहते हैं...
ओऽऽऽ!
लेकिन इससे पहले कि ध्रुव आगे कुछ बोलता...
...नागराज के इशारे ने उसे चुप करा दिया—
आप हमको नहीं जानते मिस्टर ध्रुव। लेकिन हमको आपसे कुछ जरूरी काम है! अकेले में!

और फिर लॉन में—

ये सब क्या चक्कर है नागराज? तुम इस नए रूप में क्यों हो? एक सेकेंड के लिए तो मैं भी धोखा खा गया था।

धीरज रखो, मैं सब बताता हूं। सुनो!

और फिर नागराज, ध्रुव को सब बताता चला गया। अपना नया रूप धरने के बारे में, और ध्रुव के पास आने के लिए मजबूर करने वाली समस्या के बारे में भी—

ओह! और फिर वे आदिमानव एकाएक गायब भी हो गए!

हां! चिंता वाली बात तो यह है कि वे सभी राजनगर की तरफ भाग कर आ रहे थे!

अगर वे यहां पहुंच जाते तो काफी खून-खराबा कर सकते थे!

ओह! अगर यह हादसा एक बार हो चुका है तो दुबारा भी हो सकता है!

और इसी वक्त– राजनगर के दूसरे हिस्से में—

तो तुम लोग बैंक नहीं लूट पाए। एक जबरदस्त प्लानिंग के बावजूद भी।

क्योंकि वहां पर सुपर कमांडो ध्रुव आ गया था!

तुम यहीं पर रुककर श्वेता के साथ गप्पे मारो भारती!

मैं नागराज के साथ जाकर कंट्रोल-स्टेशन का इलाका चेक करके आता हूं!

अगर ऐसा था तो तुम लोग सुपर कमांडो ध्रुव के हाथों से कैसे बच निकले?
बताओ, कमांडर नताशा को! बताओ!
क्योंकि इनको मैंने बचाया!
तुम! कौन हो तुम? यहां तक कैसे आ गए?
तुम्हारे आदमियों का पीछा करते-करते! इनको उस लड़के से बचाने के पीछे मेरा मकसद यही था।
ओह! क्या चाहते हो हमसे?
पहले अपने आदमियों को बाहर भेजो, फिर बताता हूं!
और उस रहस्यमय स्पेस-शिप में—
सन 1549
वाह! 'इमेज' ने भी अपना शिकार ढूंढ लिया है!
मैंने भी राजनगर को तबाह करने का तरीका ढूंढ लिया है नंबरवन! 16वीं शताब्दी की एक बर्बर और खूंखार सेना!

शाबाश। ये मध्यकालीन युग के सैनिक किसी भी चमत्कार से प्रभावित होने वाले नहीं हैं... और जब ये राजनगर में घुसेंगे तो ऐसी तबाही मचेगी... ऐसी तबाही मचेगी कि...आहा, मजा आ जाएगा!
उधर ध्रुव और नागराज, कंट्रोल स्टेशन पर पहुंच चुके थे-
यही वह जगह है, ध्रुव!
इस वक्त जहां पर कंट्रोल स्टेशन है, वहां पर एक गुफा उभर आई थी। सारे आदि-मानव उसी से बाहर निकले थे!
लेकिन इस वक्त तो यहां पर, कोई भी निशान नहीं है!
उनके पैरों के निशान तक नहीं। सब-कुछ गायब है, जैसे कभी कुछ हुआ ही न हो!
कहीं ऐसा तो नहीं नागराज कि किसी अजीबोगरीब घटनाक्रम में फंसकर तुम और भारती भूतकाल में चले गए हो? कुछ समय के लिए!
नहीं ध्रुव! अगर ऐसा होता तो राजनगर की वे इमारतें भी गायब हो गई होतीं, जो हमको इस स्थान से दिखाई पड़ती रहती हैं! पर वे इमारतें उस समय भी नजर आ रही थीं।
श श श... नागराज! उधर से ये तूफान जैसी आवाज कैसी आ रही है? धूल भी उड़ रही है!

नागराज ने भी उधर नजर घुमाई-
और उसकी आंखें फैलती चली गईं-
हे देवकालजयी! ये तो मध्यकालीन युग की एक सेना है ध्रुव...
...और ये राजनगर पर हमला करने जा रही है!
राजनगर पर एक और हमला? पहले आदिमानवों का और अब एक मध्यकालीन सेना का! यह...यह सब क्या हो रहा है?
मैं स्टार-ट्रांसमीटर पर राजनगर पुलिस हैडक्वार्टर को खबर तो भेज सकता हूं लेकिन जब तक वे लोग इनको रोकने की तैयारी करेंगे...
...तब तक तो ये बर्बर सैनिक कई राजनगर वासियों को मौत के घाट उतार चुके होंगे। इनको यहीं पर रोकना होगा!

लेकिन ये तो हजारों की संख्या में हैं। हम दो लोग इनको रोकेंगे कैसे ध्रुव?
तुम्हारे पास तुम्हारी सर्प-सेना है नागराज, और मेरे पास है जानवरों से बात कर सकने की शक्ति।
तो फिर आओ...
...हो जाए दो से हजारों का मुकाबला।
लेकिन इनको जान से न मारने का ख्याल रखना नागराज! जो कुछ हो रहा है, उसमें इनकी कोई गलती नहीं है।
और दो रणबांकुरे, उस बर्बर सेना का रास्ता रोकने के लिए मैदान में आ डटे—
अगले ही पल कई नुकीले हथियार, दोनों की तरफ लपके—
ध्रुव तो उछलकर बच गया लेकिन नागराज ने बचने की कोई कोशिश नहीं की—
भाले और तलवार उसके शरीर में आ धंसे—

लेकिन नागराज खड़ा रहा–
सैनिकों के बढ़ते कदमों को रोकने के लिए यह दृश्य पर्याप्त था–
और इससे पहले कि वे संभल पाते, नागराज का हमला शुरू हो गया–
इस अनोखे हमले से सैनिकों के साथ-साथ घोड़े भी भड़क उठे–
ध्रुव ने भी अपना मोर्चा संभाल कर रखा हुआ था–

और वह दुश्मन सेना पर हमला करने के साथ-साथ...
... दुश्मनों के बीच से ही अपने नए मित्र बनाता जा रहा था-
हिननन हिननन !
जो ध्रुव की सहायता करने को तुरन्त तैयार होते जा रहे थे-
नागराज अपनी सभी शक्तियों को प्रयोग में ला रहा था। लेकिन सिर्फ दुश्मनों को बेहोश करने के लिए, मारने के लिए नहीं-
फ ऊऊ
असर हो जरूर रहा था। लेकिन हजारों सैनिकों की सेना के लिए सिर्फ इतना ही प्रयास काफी नहीं था-

बात बन नहीं रही है ध्रुव! हम इतने प्रयासों के बाद भी सिर्फ कुछ ही सैनिकों को रोक पाए हैं!
इस तरह से तो हम इनको राजनगर पहुंचने से कभी रोक नहीं पाएंगे!
किसी भी बड़ी से बड़ी सेना को रोकने का एक रामबाण तरीका है नागराज...
...और वह यह कि उनके सेनापति को खत्म कर दो! सैनिक अपने-आप हथियार डाल देंगे!
वह है उनका सेनापति! उस हाथी पर सवार है। लेकिन उस तक पहुंचने के लिए बर्छी- भाले और तलवारों से लैस हजारों सैनिकों को पार करना पड़ेगा!...
...और वहां तक न तो मेरे नाग पहुंच सकते हैं और न ही विष-फुंकार!
मेरे दिमाग में एक योजना है, नागराज! और उसे पूरा करने के लिए मुझे तुम्हारा सहयोग चाहिए।
बस जहां-जहां मैं जाऊं मुझको अपने नाग-सैनिकों द्वारा कवर करते रहना!
ठीक है, ध्रुव! क्या है तुम्हारी योजना?
ध्रुव की योजना सुनते ही नागराज की आंखें चमक उठीं-

और ध्रुव के जाते ही-
ध्रुव की योजना तो जोरदार है। लेकिन उसको सहायता पहुंचाने के लिए मेरे सर्पों का निशाना सटीक होना चाहिए। और उसके लिए मुझे सर्पों का प्रयोग सर्प-बाण की तरह करना होगा...
...ये मुड़ा सांप... और बन गया कमान...
...और बेहोश सैनिक का कमरबंद बनेगी डोरी...
...ऐसे तैयार हो गया नागराज का नाग-धनुष!
ध्रुव भी अपनी तैयारी कर चुका था-
घोड़ों का हिनहिनाना इस बात का सुबूत था कि वे ध्रुव की बात समझ गए हैं-
हिनन न हिन हिन हिननन
और अगले ही पल- ध्रुव अपने साथियों के साथ, बिना एक बूंद भी खून बहाए, दुश्मन सेना को परास्त करने निकल पड़ा-

सेना में घुसते ही सारे सैनिक ध्रुव पर टूट पड़े-

लेकिन उन खाली घोड़ों पर किसी ने ध्यान नहीं दिया जो सेना में बेधड़क अन्दर घुसते जा रहे थे-

इधर नागराज का नाग-धनुष बिजली की सी गति से, नाग बाण छोड़े जा रहा था...
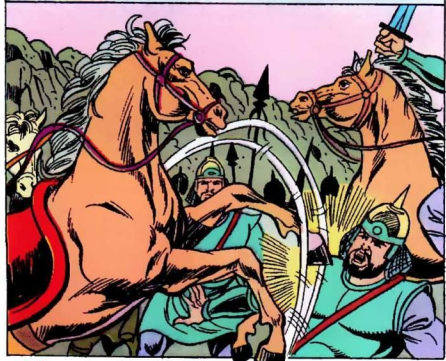
... जो सटीक निशाने पर जाकर लग रहे थे-

ध्रुव पर उठने वाले शस्त्र, ध्रुव तक नहीं पहुंच पा रहे थे-

और इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता...
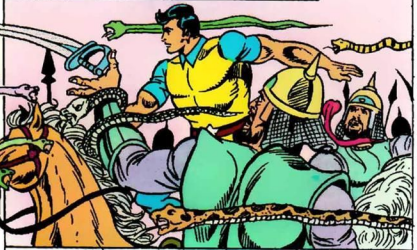
... ध्रुव का शरीर हवा में उड़ता हुआ उस खाली घोड़े पर आ टिका जो सेना में काफी अंदर घुस चुका था-

और फिर - नाग बाणों की आड़ में सुरक्षित ध्रुव, एक दूसरे घोड़े पर जा पहुंचा, जो सेना में और अन्दर घुस चुका था-
और वहां से उस घोड़े पर जो सेना में इतना अंदर पहुंच चुका था कि वह ठीक सेनापति के हाथी के सामने खड़ा था-
नागराज के बाण इतनी दूर तक नहीं पहुंच सकते थे-
लेकिन अब ध्रुव को इसकी जरूरत भी नहीं थी...
... क्योंकि उसने बाजी जीत ली थी
सेनापति अब ध्रुव के शिकंजे में था-
और पूरी सेना असहाय सी खड़ी ये दृश्य देख रही थी-
सेना के साथ-साथ कोई और भी ये दृश्य देख रहा था-

ये क्या हुआ नंबर दो ?
इस पृथ्वीवासी युवक ने सेनानायक को अपने कब्जे में ले लिया है, नंबर वन ! और बिना सेनानायक के निर्देश दिए सेनाएं लड़ नहीं सकतीं।
ऐसा तो हमारे यहां भी होता है। ...
... इसका मतलब यह हुआ कि ये खूंखार और बर्बर सेना, राजनगर की तरफ नहीं बढ़ेगी !
एकदम ऐसा ही है नंबर वन !
तो फिर अब ये सेना हमारे किसी काम की नहीं रही। ...
... किरण को बन्द कर देना चाहिए।
'किरण' के बन्द होते ही ...
खट
... सब-कुछ फिर से सामान्य स्थिति में आ गया-
?
यह क्या हो गया नागराज? एकाएक ही सब-कुछ गायब हो गया !
ऐसा ही उन आदिमानवों के साथ भी हुआ था ! वे भी एकाएक ही अदृश्य हो गए थे !
हुम ! इस समानता के अलावा इन दोनों घटनाओं में एक और भी समानता है नागराज !
कौन सी समानता?

तुम्हारी बात में दम तो लगता है ध्रुव ! लेकिन एक गड़बड़ है ! अगर कोई इन खूंखार प्राणियों को राजनगर की तबाही के लिए प्रकट कर रहा है तो यहां पर क्यों कर रहा है? सीधे राजनगर के अन्दर ही प्रकट क्यों नहीं कर देता ?

पता नहीं !

यहां पर तो तुम्हारे कंट्रोल-स्टेशन के अलावा और कुछ नहीं है...

... कहीं इससे इन घटनाओं का कोई संबंध तो नहीं है?

तुम्हारे कंट्रोल स्टेशन में काम करने वाला कोई नजर नहीं आ रहा है नागराज !

CONTROL STATIO
(RESTRICTED AREA)

इस स्टेशन में सिर्फ एक आदमी रहता है ध्रुव, एक 'मेंटेनेन्स इंजीनियर' बस ! क्योंकि ये पूरा स्टेशन ऑटोमैटिक है। और वह इंजीनियर भी छुट्टी पर गया हुआ है, क्योंकि फिलहाल कंपनी खरीदने के चक्कर में काम ठप्प पड़ा हुआ है !

और कंट्रोल-स्टेशन की सुरक्षा के लिए गार्ड्स वगैरहा नहीं हैं ?

थे! लेकिन पहलेजा के रखे गार्डों पर हमको भरोसा नहीं था, इसलिए हमने उनको निकाल दिया! और हमारे गार्ड्स आज शाम तक आएंगे!

और इस बीच कोई कंट्रोल-स्टेशन में घुस गया तो?

नहीं घुस सकता! क्योंकि इस चारों तरफ से सील, कंट्रोल-स्टेशन में सिर्फ एक ही घुसने का रास्ता है, और उस पर एक ऐसा 'इलेक्ट्रॉनिक दरवाजा' लगा है जो सिर्फ एक खास कोडवर्ड से ही खुल सकता है!

यानी इस स्टेशन से गड़बड़ी होने की कोई आशंका नहीं है!

फिलहाल तो नहीं।

तो फिर आओ! घर चल-कर सोचते हैं कि आखिर ये सब चक्कर क्या है?

और इसी वक्त- राजनगर के एक दूसरे हिस्से में—

हम्म्म्! यानी तुम हमको काम बाद में बताओगी! ठीक है! लेकिन अगर हम तुम्हारा काम कर देंगे तो बदले में हमको क्या मिलेगा?

तुमको मिलेगा। एक ऐसे आधुनिक शस्त्रों का एक बड़ा जखीरा, जिनको धरती का बड़े से बड़ा अस्त्र भी हरा नहीं सकता!

तो क्या ये हथियार धरती से बाहर के हैं? कौन हो तुम?
इन सवालों का जवाब ढूंढ़कर अपना समय व्यर्थ मत करो। काम हो जाने के बाद भी ये हथियार तुम्हारे पास ही रहेंगे।...
...और इनसे तुम चाहो तो धरती पर राज कर सकते हो, और चाहो तो धरती को नष्ट कर सकते हो।
तुम किस काम की इतनी बड़ी कीमत देने को तैयार हो?...
...इमेज! तुम मेरे को 'इमेज' कह सकते हो!
और काम, समय आने पर बता दिया जाएगा।...
...तब तक इंतजार करो!
और स्पेस शिप में–
हमारा दूसरा भीषण वार भी बेकार हो गया...
...अब तक के हमारे दोनों तरीके पृथ्वी के इतिहास में से लिए हुए थे! इसलिए इन हमलों को रोकने में पृथ्वीवासी सफल रहे...
...अब हमको कोई ऐसा जबरदस्त हमला सोचना पड़ेगा! जो पृथ्वीवासियों ने कभी देखा ही नहीं। जिससे वे कभी लड़ ही न सकते हों...

आपने एक बात का ध्यान दिया, नंबर वन? हमारा रास्ता तीन बार रोका गया है। पहली बार 'इमेज' की, दूसरी बार आदिमानवों की और तीसरी बार इस बर्बर सेना की।
और तीनों ही बार हमारा रास्ता काटने वाले ये दोनों पृथ्वी-वासी ही थे।
हुम! इस बात पर तो मैंने भी ध्यान दिया था नंबर टू!
हम लोगों को इन दोनों पर नजर रखनी होगी। ताकि ये इस बार हमारी योजना पर पानी न फेर सकें।
मैं रखता हूं।
और राजनगर में—
कहो भारती, बोर तो नहीं हुई?
बोरियत कैसी? मैं तो श्वेता की वीडियो-गेम खेलते हुए देख रही थी। कमाल का खेलती है!
टें टें टें टें टें कटप खट
अरे... अरे...
...ये लेसर तोप कहां से आ गई?
बूम बाम भाड़
वो मारा!
खत्म हो गई लेसर तोप भी।
श्वेता इज ग्रेटेस्ट!

★ पढ़ें 'कमांडर नताशा' (ध्रुव सीरीज)

और कोई और अपनी परेशानियों से-

सोचो, सोचो, नंबर दो! कोई अनोखा तरीका सोचो राजनगर को तबाह करने का। अरे, जब हम राजनगर को तबाह नहीं कर पा रहे हैं, तो लन्दन और न्यूयार्क को कैसे तबाह करेंगे?

नंबर वन! इधर देखिए। यह वह मॉनीटर है जो नागराज और ध्रुव नामक पृथ्वीवासियों की हरकतों पर नजर रखे हुए हैं...

...देखिए, इस वक्त उस पर क्या आ रहा है?

तबाही नंबर वन!

तो तुम तुरंत इन वीडियो गेम कैमरों को नकल करके, इन आकृतियों को 'किरण' के द्वारा राजनगर में भेजने की व्यवस्था करो।

ये भइया और मिस्टर राज अपने-आपको इतना स्मार्ट क्यों समझते हैं? जरा से बाल सीधे कर लिए और चश्मा लगा लिया तो समझ बैठे कि श्वेता, नागराज को पहचान नहीं पाएगी।

लेकिन श्वेता सिर्फ श्वेता ही नहीं, चंडिका भी है। और चंडिका से छिपना बहुत मुश्किल काम है।

नागराज कंट्रोल स्टेशन के लिए रवाना हो रहा था-
और उसके गार्ड्स पहले ही कंट्रोलस्टेशन पहुंच चुके थे-
कमाल है! भारती जी तो यहां पर पहुंची ही नहीं।
CONTROL STATION (RESTRICTED AREA)
कोई बात नहीं! कहा है तो आएंगी जरूर!...
...तब तक हम इंतजार कर लेंगे। अब तो यहीं पर ही रहना है!
LONTROL STATION (RESTRICTED AREA)
उस गार्ड को यह पता नहीं था कि...
...उसको कयामत तक वहीं पर रहना था-
क्योंकि उसी जगह पर जलनी थी उन सबकी चिता-
वाह! क्या हथियार है! नामोनिशान तक नहीं बचा!
अब तुम लोग रोबो आर्मी के आदमी नहीं हो! बल्कि मिस भारती और मिस्टर राज के बुलाए हुए गार्ड्स हो।
अपनी-अपनी पोजीशन ले लो। और जो भी इस कंट्रोल स्टेशन के आस-पास भी आए उसको खत्म कर दो!
चाहे वह नागराज ही क्यों न हो!
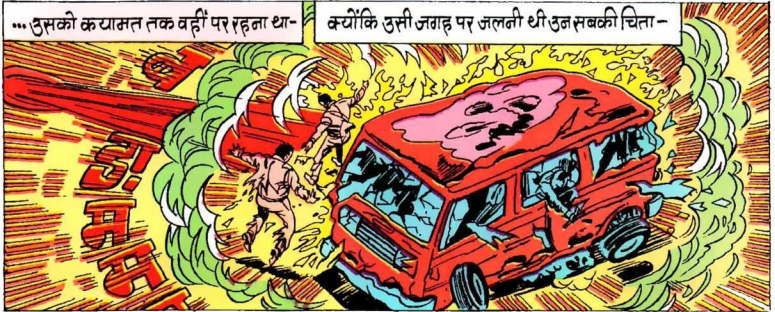
अंतरिक्ष यान पर-
वीडियो गेम कैसटों की कॉपी भी तैयार हो गई है, और कंट्रोल-स्टेशन पर पहरा भी बैठा दिया गया है, नंबर वन ...
... तैयारी पूरी है। अब सिर्फ आपके आदेश की प्रतीक्षा है...

प्रतीक्षा तो मुझे भी है राजनगर की तबाही की! और इस बार हमारा तरीका फुलप्रूफ है। क्योंकि इस बार तबाही राजनगर के बाहर से नहीं, राजनगर के अंदर से शुरू होगी। क्योंकि ये वीडियो-इमेज सीधे राजनगर के बीचों-बीच उतरेंगी!
ऐसा आपने आदिमानवों और बर्बर सेना के साथ क्यों नहीं किया नंबर वन? उनको तो राजनगर के बाहर प्रकट किया गया था।

वह इसलिए मूर्ख, क्योंकि उन दोनों का वास्तविक स्थान वहीं पर था। लाखों वर्ष पहले आदिमानव वहीं पर रहते थे और उस बर्बर सेना ने युद्ध भी वहीं पर लड़ा था। हमारी किरण ने तो सिर्फ उनको फिर से जीवित किया था।

लेकिन इन वीडियो इमेजों का कोई वास्तविक स्थान नहीं है। इनको तो जहां चाहे वहीं पर प्रकट किया जा सकता है।
देखो! ये दबा बटन, चालू हुई 'किरण' और शुरू हो गई ...
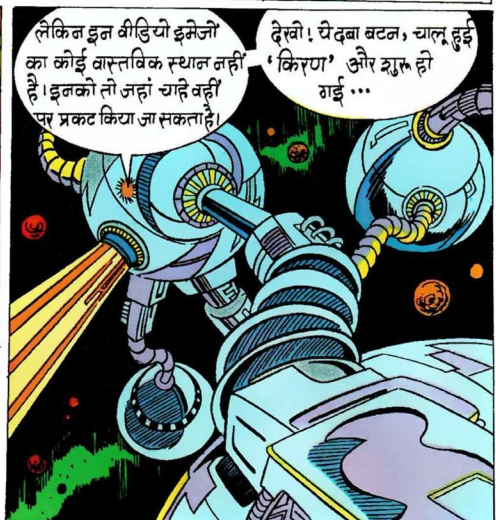
...राजनगर की तबाही–
चलो! हैवी ट्रैफिक वाला रास्ता तो पार कर लिया।...
...इस रास्ते पर ज्यादा ट्रैफिक नहीं है। अब कंट्रोल स्टेशन पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा!
अचानक-
य... यह एकाएक क्या हो रहा है भारती?
मेरी आंखें धोखा खा रही हैं या...या...
...सारे दृश्य खुद ब खुद धुंधले पड़ते जा रहे हैं।
मुझे भी कुछ ऐसा ही दिख रहा है, नागराज!
यह... राजनगर पर सीधा हमला लग रहा है भारती!...
...मुझे नागराज के रूप में आ जाना चाहिए।
सारे दृश्य एकदम काल्पनिक से हो गए हैं नागराज! ऐसा लग रहा है... ऐसा लग रहा है...
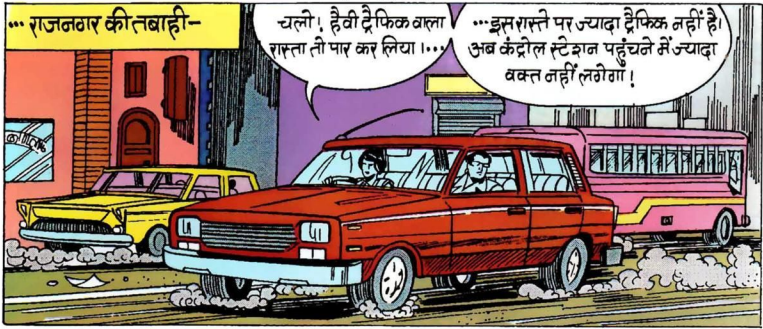
जैसे हम लोग किसी 'वीडियो गेम' के बीचो-बीच खड़े हुए हैं।...
...ठीक वैसा ही जैसा श्वेता खेल रही थीं।
वीडियो गेम!
अरे हां...
... ये तो 'स्टील मॉन्सटर्स' का चौथा हाउस है। ये वीडियो गेम तो मैंने भी खेला हुआ है नागराज!
अच्छा! और तुम्हारा नाम क्या है?
अभिषेक!
?
तो अभिषेक इस गेम में आगे क्या होगा?
वैसे तो यहां पर एक 'स्टील-शार्क' आती है! लेकिन फिलहाल तो कहीं नजर आ नहीं रही!
नागराज! अभिषेक!
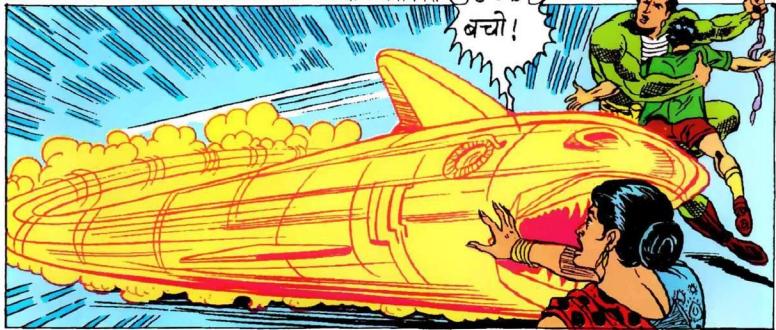
ओह! मेरी कार एक स्टील शार्क में बदल गई है!

और भारती उसी के अंदर है!
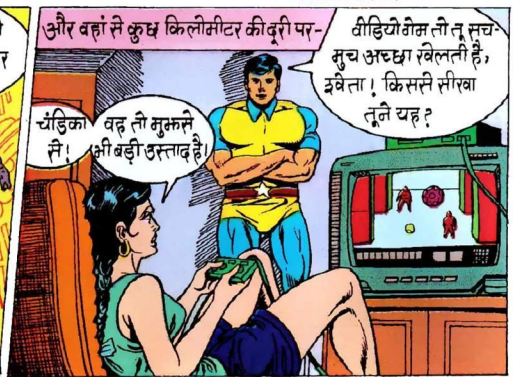
और वहां से कुछ किलोमीटर की दूरी पर-

वीडियो गेम तो तू सच-मुच अच्छा खेलती है, श्वेता! किससे सीखा तूने यह?

चंडिका से!

वह तो मुझसे भी बड़ी उस्ताद है!

चंडिका? ओह! वह सुपर रहस्यमय कन्या? तुम्हारी बेस्ट फ्रेंड!

उसके पास भी तुम्हारी तरह फालतू टाइम...

कैप्टेन! कैप्टेन ध्रुव!

फिफ्थ एवेन्यू पर बड़ी अजीबो-गरीब सी घटना हो रही है!

कैसी घटना रेणु?

'फिफ्थ एवेन्यू' का पूरा इलाका एक वीडियो गेम के सेट सा बन गया है! ऐसा लग रहा है जैसे वह असली इलाका नहीं बल्कि टी० वी० स्क्रीन पर चल रहा वीडियो गेम ही।
तुमको कैसे पता चला? और...और पुलिस हैडक्वार्टर से मेरे पास मैसेज क्यों नहीं आया?
मैं उसी एरिया के पास गश्त पर थी।
...सारे ट्रांसमीशन गड़बड़ हो रहे हैं! मैसेज साफ नहीं आ रहे हैं...
...इसीलिए मैंने फोन करने के बजाय यहां आकर ही तुमको खबर देना ज्यादा उचित समझा!
ओह! यह भी जरूर राजनगर को तबाह करने की कोशिश है...
...तीसरी कोशिश!
तीसरी कोशिश? पहली दो कब हुई थीं?
लौटकर बताऊंगा!
ठीक है भइया!
मैं चंडिका से संपर्क करने की कोशिश करती हूं!
किसलिए?
तुम्हारी मदद के लिए। वीडियो गेम का मामला है। इसमें चंडिका तुम्हारी काफी मदद कर सकती है।
ट्रांसमीशन सचमुच जाम हो रहे थे-
यह क्या? स्क्रीन पर एकाएक डिस्टर्बेंस क्यों आने लगी?
खैर मैं कंप्यूटर की मदद से ही पता कर लूंगी कि इस डिस्टर्बेंस का केन्द्र कहां पर है...
...और यह भी कि इस डिस्टर्बेंस का कारण क्या है?

कारण जानने में थोड़ा समय जरूर लगा–
लेकिन कारण जानकर रिचा की आंखें फैलती चली गई–
ओ माई गॉड! डिस्टर्बेंस का मुख्य केन्द्र एक संचार उपग्रह का कंट्रोल सेंटर है।
जो काली पहाड़ी पर बना हुआ है।
लेकिन इस वक्त सेटेलाइट से जो सिग्नल कंट्रोल स्टेशन तक आ रहे हैं, वे आडियो विजुअल सिग्नल नहीं हैं...
...ये कुछ अजीब से सिग्नल हैं। और मुझे पूरा यकीन है कि सारी गड़बड़ इन सिग्नल के कारण ही है।
ब्लैक कैट को इस मामले की तह तक पहुंचना ही होगा।
और राजनगर की फिफ्थ एवेन्यू पर–
इस स्टील शार्क पर तो मेरी सारी शक्तियां बेअसर हैं। इसको खत्म कैसे किया जा सकता है, अभिषेक?
वैसे तो इसकी 'पॉवर सोर्ड' से खत्म किया जा सकता है, लेकिन यहां पर तलवार तो कहीं है ही नहीं!
काश, इस वक्त कहीं से पॉवर सोर्ड मिल जाती तो...
अरे! मेरे सोचते ही मेरे हाथ में 'पॉवर सोर्ड' आ गई। यानी... यानी यह वीडियो गेम दृश्य सिर्फ चीजों का रूप ही नहीं बदलता...
...बल्कि असली गेम की तरह उनको हराने की शक्ति भी देता है। और वह भी सोचते ही...

अब क्या अभिषेक?
इसकी पीठ पर लगे डैने यानी 'फिन' पर वार करो नागराज! यह तुरन्त खत्म हो जाएगा!
नागराज के एक ही सटीक वार ने डैने को स्टील शार्क के धड़ से अलग कर दिया–
खच्च
और डैने के कटते ही–
'स्टील शॉर्क वापस कार के रूप में आ गई–
भारती! तुम ठीक तो हो न?
थोड़ा सा सिर घूम रहा है, बस! वैसे तो ठीक महसूस कर रही हूं।
लेकिन ये वीडियो गेम दृश्य तो स्टील शॉर्क के मरने से भी खत्म नहीं हुआ!
मेरे ख्याल से हमको इस गेम से बाहर निकलने के लिए पूरा हाउस खेलना पड़ेगा!
अब इसके बाद क्या आता है अभिषेक?
इसके बाद टेक्नोसोरस आता है। उसको मार दोगे तो ये हाउस पार हो जाएगा।
टेक्नोसोरस? यह क्या...
यह तो...

... यह तो बहुत ही खतरनाक और विशाल राक्षस है अभिषेक !
इसको कैसे खत्म किया जाएगा ?
प...पता नहीं नागराज ! इसको मैं कभी पार नहीं कर पाया।
और दूसरी तरफ - ध्रुव तेजी से फिफ्थ एवेन्यू की तरफ बढ़ रहा था...
... लेकिन उसको यह पता नहीं था...
... कि वीडियो इफैक्ट अपना दायरा बढ़ा रहा था-
य... यह क्या हो रहा है ? चारों तरफ का दृश्य धुंधला सा क्यों होता जा रहा है ?...
... और मेरी मोटर साइकिल को ये क्या हो रहा है ?
मेरी मोटर साइकिल एक ड्रेगन में तब्दील हो गई है।

ओह! सिर्फ मेरी ही नहीं, और दूसरी गाड़ियां भी ड्रेगनों में तब्दील हो गई हैं।...

... और ये ड्रेगन राजनगर पर बम गिरा रहे हैं। ये राजनगर को तबाह कर रहे हैं...

... और मैं इनको रोकने के लिए कुछ नहीं कर सकता...
राजनगर की तबाही शुरू हो चुकी थी...

... और साथ ही साथ उसको बचाने के प्रयास भी—
हांय! ये तो 'ड्रेगन स्कूल' का पांचवां हाउस है!

मैं तो भइया के पीछे-पीछे उसकी मदद करने के लिए आई थी ! लेकिन मेरे कुछ समझने से पहले ही सारा दृश्य बदलने लगा था ! वैसे तो इन ड्रेगनों को 'किलर-फ्यूम' से खत्म किया जाता है ! लेकिन वे फ्यूम तो 'किलर पंप' में से निकलती हैं ...
... वीडियो गेम में तो 'किलर-पंप' एक बटन दबाते ही हाथ में आ जाता है। लेकिन यहां पर तो...
अरे ! सोचते ही मेरे हाथ में 'किलर पंप' आ गया। यानी वीडियो गेम में जो बटन दबाने से होता है, वह इस गेम में सोचने से होता है।
खैर! कुछ भी हो, अब इन ड्रेगनों की खैर नहीं !
भइया वाले ड्रेगन को ही सबसे पहले खत्म करती हूं। वह इसी तरफ आ रहा है !
भइ... ध्रुव! तुम इस छत पर कूद जाना...
... मैं इस ड्रेगन को खत्म करने जा रही हूं।
चंडिका ! यानी श्वेता ने तुमसे संपर्क बना ही लिया।
कूदो !
किलर फ्यूम की चपेट में आते ही ड्रेगन खत्म होना शुरू हो गया...
...और ध्रुव के साथ-साथ उसकी मोटरसाइकिल भी अपने वास्तविक रूप में आकर छत पर आ गिरी—
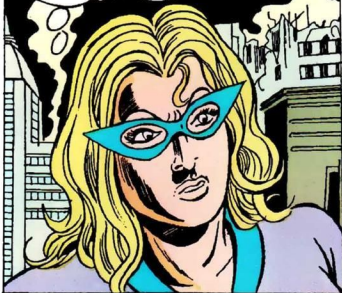
ड्रेगनों को खत्म करने वाली ये 'गन' तुमको कहां से मिली चंडिका? अगर ये 'गन' मेरे पास भी होती तो मैं भी ड्रेगनों को खत्म करने में मदद कर सकता था।

ये गन नहीं 'किलर पंप' है ध्रुव! और इसका ध्यान करते ही यह पंप तुमको भी मिल जाएगा।

मिल जाएगा से क्या मतलब है?

ऐसे ही हवा में से मिल जाएगा?

हां! तुम सोचो तो!

और ध्रुव के ध्यान लगाते ही—

वाह! सचमुच! यानी वीडियो गेम में जो बटन दबाने से होता है, वह यहां सोचने से ही हो जाता है।

ठीक समझे! अब इस पंप में से फायर करने पर फ्यूम निकलेगी...

... सारे ड्रेगन इसकी महक से खिंचे चले आएंगे और फ्यूम के संपर्क में आते ही खत्म हो जाएंगे।

'खत्म हो जाएंगे'। यानी ये अपने वास्तविक रूप में आ जाएंगे!...

...वाहनों के रूप में।

तो लो ये किया मैंने फायर!

'किलर-फ्यूम' ड्रेगनों को अपनी तरफ खींचने लगी—

और उसके संपर्क में आते ही ड्रेगन वापस वाहनों के रूप में बदलने लगे—

यह क्या हो रहा है नंबर टू?
ये दोनों तो मिलकर राजनगर में तबाही फैलाने वाले ड्रेगनों को खत्म कर रहे हैं!
ये इनका नहीं इस 'पंप' का कमाल है!
ये 'पंप' इनको कैसे मिल गया?
क्योंकि वीडियो गेम में ये ड्रेगन इस 'किलर-पंप से ही मरते हैं। हर खेल की तरह वीडियो गेम में कुछ नियम होते हैं नंबर वन!
और मैं इन नियमों को नहीं बदल सकता हूं।
वीडियो गेमों के जो भी प्राणी जिस भी हथियार से खत्म होते हैं वह हथियार इनको सोचते ही मिल जाएगा।
मैं इनको नहीं रोक सकता, नंबर वन!
रोक सकते हो! इनको किसी ऐसे वीडियो गेम में डाल दो, जहां पर न तो प्राणी हों और न ही हथियार! इनको किसी ऐसी भूलभुलैया में डाल दो जहां से ये राजनगर की तबाही के बाद ही निकल पाएं।
और अगले ही पल—
ध्रुव और चंडिका के आसपास का दृश्य बदल गया—
य...यह क्या हुआ चंडिका?
यह हम कहां पर आ गए?

यह तो 'डंजन एंड ड्रेगन' की भूलभुलैया लगती है! ...
... ये गेम मैंने बहुत पहले खेला था। तब यह सब उसमें नहीं था। यह उस गेम का नया रूप लगता है।
और इससे कैसे बाहर निकला जाएगा, यह मुझे नहीं पता।
कोई बात नहीं चंडिका! सामने तीन सुरंगें दिख रही हैं। इनमें से एक सुरंग बाहर जाने का रास्ता है...
... और यह सिर्फ कोशिश करने से ही पता लग सकता है कि वह सुरंग कौन सी है।
आओ! हमारे पास वक्त नहीं है...
...हमको तीनों सुरंगों को एक-एक करके तलाशना होगा।
ताकि हमको सही सुरंग का पता चल सके।
नागराज के पास भी वक्त नहीं था—
इसको खत्म करने का तरीका तो मुझे पता नहीं...
... लेकिन शायद ये पॉवर सोर्ड कुछ असर दिखा सके।
लेकिन 'पॉवर सोर्ड' उस मैकेनी सोरस के शरीर से टकराते ही चूर-चूर हो गई—
और नागराज का शरीर, शिकंजे में कस गया—

और वह शिकंजा नागराज को उसकी मौत की तरफ ले जाने लगा–
यानी अपने मुंह की तरफ–
और कंट्रोल-स्टेशन पर–
हम्म् ! अजीब से हथियार लिए कई सारे गार्ड कंट्रोल स्टेशन की रखवाली कर रहे हैं। लगता है मेरा शक गलत नहीं है!
यहां पर जरूर कुछ गड़बड़ है...
...और वह गड़बड़ क्या है...
...वह ये गार्ड मुझे बताएगा।
...लेकिन उसमें से आवाज नहीं निकली–
गार्ड का मुंह चिल्लाने के लिए खुला जरूर...
और उसके बाद उसके चिल्ला सकने की सारी संभावनाएं खत्म हो गईं–
अब वह सिर्फ फुसफुसा सकता था–
क्या कर रहे हो तुम लोग यहां पर? ये हथियार कहां से आए तुम्हारे पास?
ब्लैककैट की एक झलक उसके होश फाख्ता कर देने के लिए काफी थी–

ह... हम 'भारती कम्युनिकेशन' के गार्ड हैं। ये हथियार भी हमको उन्होंने ही दिए हैं। और हमको आदेश है कि जो भी इस कंट्रोल-स्टेशन के आस-पास आए, उसे उड़ा दिया जाए।
ऐसा हथियार तो मैंने आज-तक नहीं देखा! इसमें गोलियां कैसे भरते हैं?
इसमें से गोलियां नहीं, 'विखंडन किरण' निकलती है लड़की...
... जो किसी भी वस्तु को एक पल के सौवें हिस्से में हवा कर सकती हैं।
और अब अगर तूने हिलने की कोशिश की तो तेरा भी यही हाल होगा!
बता! कौन है तू? यहां किसलिए आई है?
इधर ब्लैककैट रोबो के आदमियों के बीच में फंसी हुई थी...
... और उधर- ध्रुव और चंडिका उस भूलभुलैया में-
ये तीसरी सुरंग है चंडिका! लेकिन इसका रास्ता भी हू-बहू पहली दोनों सुरंगों की तरह ही है।
हां, और इसका मतलब है कि..

...हम फिर उसी जगह पर वापस निकल आएंगे, जहां पर से ये तीनों सुरंगें शुरू होती हैं।
ये तो अजीब भूलभुलैया है!...
...जहां से चलो, फिर वहीं पर आ जाते हैं...
...आखिर बाहर निकलने का रास्ता कोई न कोई तो होगा ही।
लेकिन वह रास्ता ये सुरंगें नहीं हैं। ऐसी ही एक भूलभुलैया 'मारियो' के गेम में भी थी। चौथे हाउस का चौथा घर!
लेकिन उसमें ऊपर चढ़कर नीचे उतरने से सही रास्ता अपने-आप मिल जाता है। पर इसमें ऐसा भी कोई रास्ता नजर नहीं आया।
इसका मतलब यह है कि रास्ता कहीं और होगा। ये सुरंगें सिर्फ धोखा देने के लिए हैं।
और उस रास्ते का संबंध उन गोलों से जरूर है। क्योंकि यहां पर ये ही एक ऐसी चीज है जो बाकी चीजों से अलग नजर आ रही है...
...देखते हैं कि इसको खटखटाने से क्या होता है।
पहले गोले पर वार करने से कुछ नहीं हुआ-

लेकिन दूसरे गोले पर वार होते ही...
...एक नई सुरंग नजर आने लगी-
वाह! ये तो रास्ता बन गया!
पर अंदर कुछ नजर नहीं आ रहा।
काफी अंधेरा है। कहीं यहां पर कोई खतरा न हो!...
...हम जब तक यहां पर खड़े रहेंगे, राजनगर की करोड़ों जानों पर खतरा मंडराता रहेगा!
हमको जल्दी से जल्दी यहां से निकलकर राजनगर की तबाही को रोकना है। और उसके लिए मैं हर खतरा उठाने को तैयार हूं। आओ!
और अंदर पैर रखते ही-
दोनों के शरीर तेजी से फिसलते चले गए-
ओ माई गॉड! यह तो 'जाएंट-स्लाइड' है ध्रुव!
हम बहुत तेजी से नीचे फिसल रहे हैं...
...अगर नीचे हमारी स्पीड को कम करने के लिए कोई चीज न हुई तो हमारी हड्डियां बदन से अलग हो जाएंगी!

लेकिन उसकी नौबत नहीं आई -
नीचे तक पहुंचते-पहुंचते 'स्लाइड' का ढलान काफी कम हो चुका था–
पता नहीं, अब हम बाहर निकलकर किस मुसीबत में फंसने वाले हैं।
लेकिन जिस जगह पर ध्रुव और चंडिका बाहर निकले...
... वहां पर कोई और मुसीबत में था–
नागराज!
ओह! यह तो हम स्टील मॉन्सटर्स के गेम में आ गए हैं। और यह टैकनो-मैकेनो सोरस है।
इससे बचने की कोशिश मत करो, नागराज! जितना कसमसाओगे ये उतना ही तुमको दबाता जाएगा! तुम 'जादुई-रसायन' का ध्यान करो, और हाथ में आते ही उसको तुरन्त पी जाना!
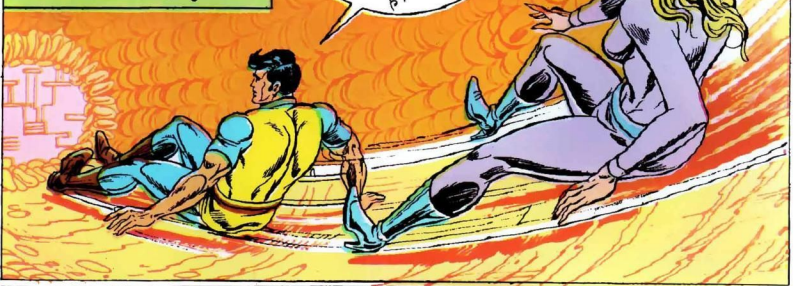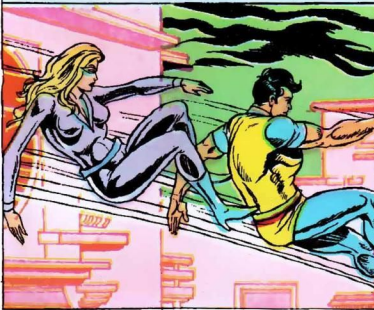
जादुई रसायन ! तो ये है इस मैकेनोसॉरस का तोड़!
नागराज के जादुई रसायन पीते ही...
गटक गटक
... सब कुछ सामान्य अवस्था में आ गया -
ध्रुव ! चंडिका ! तुम लोग यहां पर कैसे आ गए ?
हम एक दूसरे गेम में फंसे हुए थे ! न जाने कैसे हम उस गेम से इस गेम में आ गए तुम्हारे पास।
चलो ! ये तो अच्छा ही हुआ कि तुम लोग यहां पर आ गए, और चंडिका ने मुझे मैकेनोसोरस को मारने का तरीका बता दिया ! वर्ना यह राक्षस मुझको ही मार डालता।
अभी 'वीडियो गेम इफैक्ट' खत्म हो गया है, लेकिन न जाने फिर कब शुरू हो जाए !
इसलिए इन दोनों को लेकर यहां से निकल जाओ भारती, मैं, नागराज और चंडिका इस समस्या की जड़ तक पहुंचने की कोशिश करते हैं।
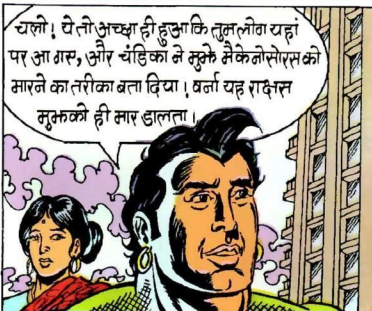
और उस अंतरिक्ष यान में-
यह क्या हो गया नंबर टू! ये दोनों नागराज और ध्रुव तो अलग-अलग गेमों में फंसे हुए थे। ये एक जगह पर कैसे आ गए?
ये दोनों गेम एक ही कंट्रोल-पैनल में चल रहे हैं नंबर वन! इसलिए इनका कहीं न कहीं से कनेक्शन होना स्वाभाविक है। और यही कनेक्शन राजनगर में चल रहे अलग-अलग वीडियो गेम इफैक्टों तक भी पहुंच गया होगा!
दुबारा ऐसी गलती मत करना!
और वीडियो-गेमों को तुरन्त बदल दो!
और राजनगर में-
भारती, अभिषेक और उसकी मां को लेकर निकल चुकी थी-
तुमने इस समस्या की जड़ तक पहुंचने की बात कह तो दी ध्रुव, लेकिन उस जड़ को ढूंढा कैसे जाएगा?
वह जड़ तुम्हारे कंट्रोल-स्टेशन में है नागराज! उसको ढूंढ कर नष्ट कर दो, तो ये वीडियो-इफैक्ट भी नष्ट हो जाएगा। तुम कंट्रोल-स्टेशन जाकर अपना काम करो, और हम लोग यहां पर इस तबाही को रोकने की कोशिश करते हैं।
ओ० के० ध्रुव! गुड आइडिया!

नागराज तुरन्त कंट्रोल-स्टेशन की तरफ रवाना हो गया-
हम लोग तबाही को कैसे रोकेंगे ध्रुव! हमारा दुश्मन हर बार गेम बदलता जाएगा, और हम लड़ते-लड़ते थक जाएंगे।
यह जो कुछ भी हो रहा है, चंडिका, वह किसी अत्याधुनिक विज्ञान का करिश्मा है...
...और अत्याधुनिक विज्ञान को अत्याधुनिक विज्ञान से ही काटा जा सकता है।
हम धनंजय की मदद लेंगे!
उसके पास स्वर्ण नगरी की अत्याधुनिक तकनीक मौजूद है।
फिफ्थ एवेन्यू, समुद्र तट के बगल में ही स्थित था-
कुछ ही मिनटों बाद-
वह आ गई डॉल्फिन! यह मेरा संदेश स्वर्ण-नगरी तक पहुंचा देगी।
ध्रुव और डॉल्फिन के बीच सीटियों की भाषा में बातें शुरू हो गईं-
और तभी अचानक-
ध्रुव! वीडियो इफैक्ट फिर से शुरू हो रहा है!
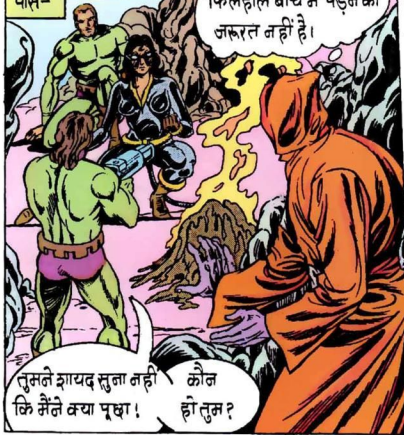
और कंट्रोल-स्टेशन के पास-
सिचुएशन कंट्रोल में है! मुझे फिलहाल बीच में पड़ने की जरूरत नहीं है।
तुमने शायद सुना नहीं कि मैंने क्या पूछा!
कौन हो तुम?
मुझे तुम जैसे कीड़े ब्लैककैट कहते हैं। जानते हो क्यों?
क्योंकि मेरा पहनावा बिल्ली जैसा है। हरकतें बिल्लियों जैसी हैं। और मेरा हथियार भी बिल्लियां ही हैं।
जेनिफर स्टैक!
जेनिफर नाम की उस बिल्ली से टकराते ही...
...मांस के लोथड़े हवा में बिखर गए...
...एक धमाके के साथ-
और इस धमाके से शुरू हो गया युद्ध का ऐलान-
ब्लैककैट के पास...
... अब पूछताछ करने का समय नहीं था-
गुंडों के पास अत्याधुनिक हथियार तो जरूर थे, लेकिन हथियारों से न तो कोई लड़ाई कभी जीती गई है, और न ही जीती जाएगी-
कड़ाक

लड़ाई में काम आता है तो ठंडा दिमाग, युद्ध कौशल...
... और जीतने की एक ज्वलंत इच्छा–
कमाल है! इस लड़की ने तो पलक झपकते ही सारे गुंडों को बेहोशी की दुनिया में पहुंचा दिया...
... और मुझे इतना भी मौका नहीं दिया कि मैं इसको रोक सकूं...
... अरे! ये कौन आ रहा है? अभी मेरा छिपे रहना ही उचित लगता है।
आने वाले की खबर ब्लैक-कैट को भी हो गई थी–
कोई आ रहा है। यह जरूर इन कमीनों का बॉस होगा! जो भी हो, अब यही मुझको बताएगा कि यहां पर क्या हो रहा है!
... लेकिन उसको देखा कभी नहीं था–
अरे! यह क्या? ये तो वही गार्ड लगते हैं, जो आने वाले थे!
ब्लैककैट ने नागराज के बारे में काफी कुछ सुन तो रखा था...
इस कंट्रोल स्टेशन में जरूर कुछ गड़बड़ है...
... लेकिन इनकी ये दयनीय हालत बनाई किसने?
मैंने!
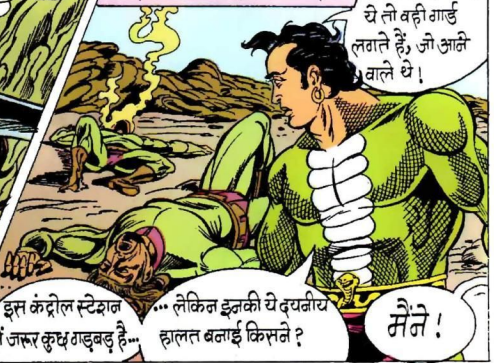
ओह! कौन हो तुम?
तुम्हारे गुंडों को मैं पहले ही बता चुकी हूं कि मुझे ब्लैककैट कहते हैं। और ये जानने के बाद वे होश में नहीं रह पाए।
अब तुम मुझे बताओ कि तुम कौन हो? इस कंट्रोल स्टेशन पर तुम्हारे आदमी क्या कर रहे हैं?
हालांकि तुम मुझे अपनी पोशाक से ही अपराधी लग रही हो, और मैं तुम्हारे सवालों का जवाब देने को बाध्य नहीं हूं, लेकिन फिर भी बेकार के झगड़े से बचने के लिए बताता हूं।
ये कंट्रोल स्टेशन मेरे दोस्तों की सेटेलाइट कंपनी का है...
...और ये इस कंट्रोल-स्टेशन के गार्ड थे, जिनको तुमने बेहोश कर दिया।
ओह! तो ये गुंडे तुम्हारे गार्ड थे। तो जरा यह भी बता दो कि इनके पास ये हथियार कहां से आए, जो 'विध्वंसक किरण' छोड़ते हैं, और देखने से ही पृथ्वी के नहीं बल्कि दूसरे ग्रह के लग रहे हैं!
मुझे नहीं मालूम कि ये हथियार कहां से आए? यह बात तो सिर्फ ये गार्ड ही बता सकते हैं।
ओह! यानी तुम ये नहीं जानते कि तुम्हारे ही आदमी हथियार कहां से लाए! ...
...लगता है उंगली टेढ़ी करनी ही पड़ेगी...
तड़ाक

ओह! तुम मुझे गलत समझ रही हो! सुनो, मैं ना...
अह!
बताओ कि इस कंट्रोल स्टेशन में क्या गड़बड़ हो रही है?
CONT
धड़ाक
इधर नागराज, ब्लैक कैट को अपनी बात नहीं समझा पा रहा था...
... और दूसरी तरफ, ध्रुव खुद नहीं समझ पा रहा था कि ये सब आखिर हो क्या रहा है—
यह क्या चंडिका? एकाएक आकाश में बहुत सारे लड़ाकू विमान आ गए हैं, और ये राजनगर पर बमों की बारिश कर रहे हैं...
... ऐसे तो ये एक घंटे के अंदर-अंदर राजनगर को तबाह कर देंगे। इनको रोकने का क्या तरीका है?

ये 'टोरा-टोरा' वीडियो गेम चल रहा है ध्रुव! ये फाइटर बॉम्बर प्लेन है। इनको नष्ट करने के लिए हमको 'फ्लाईंग एंटी एयर क्राफ्ट गन' का सहारा लेना पड़ेगा!
फ्लाईंग एंटी एयर क्राफ्ट गन!
लेकिन एक बात का ध्यान रखना ध्रुव! इन फाइटर प्लेनों को एक ही बार में नष्ट करना होगा, और उसके लिए इनके बीचों-बीच में वार करना जरूरी है।...
...किसी और जगह पर निशाना लगाने से, यह हमारी स्थिति को भांप कर, हम पर ही मिसाइल दाग देगा!
समझ गया चंडिका! तुम चिन्ता मत करो! वीडियो गेम पर मेरा हाथ चाहे सधा हुआ न हो...
...लेकिन निशाना लगाने का मुझे बहुत एक्सपीरियेंस है!
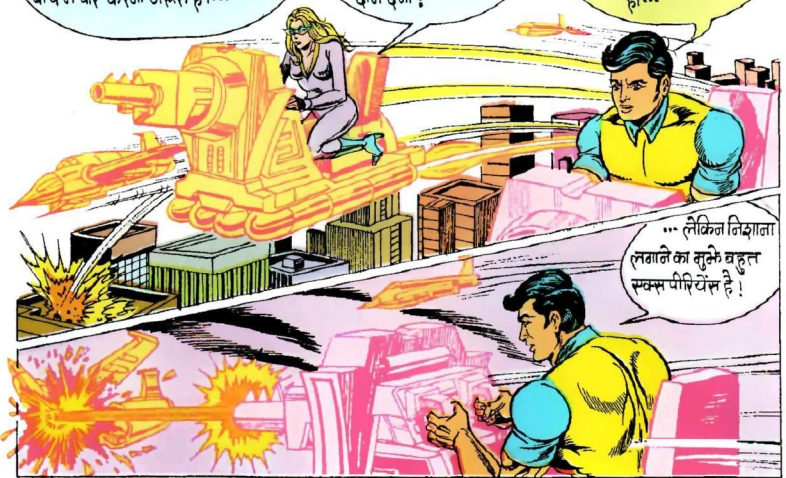
और दूसरी तरफ -
नागराज के सब्र का पैमाना छलक चुका था -
बस! बहुत हो गया! अब तुम मुझे बताओगी कि तुमने इस कंट्रोल स्टेशन में क्या गड़बड़ी की है?
ये नाग रस्सी!
ओह! तो तुम नागराज हो! और तुम अपने दोस्त को बचाने के लिए अपराधियों का साथ दे रहे हो!
लेकिन तेरा मुकाबला ब्लैककैट से है। और ब्लैककैट जब दुश्मनी करती है तो निभाती भी है।
फिर चाहे दुश्मन नागराज हो, या सुपर मैन।
खच
ब्लैककैट का बदन हरकत में आया -
और नागराज के नाग कट-कटकर गिरने लगे -
ओह! कमाल की फुर्ती है इस लड़की में। इसने तो मेरी नागसेना को काटकर रख दिया!
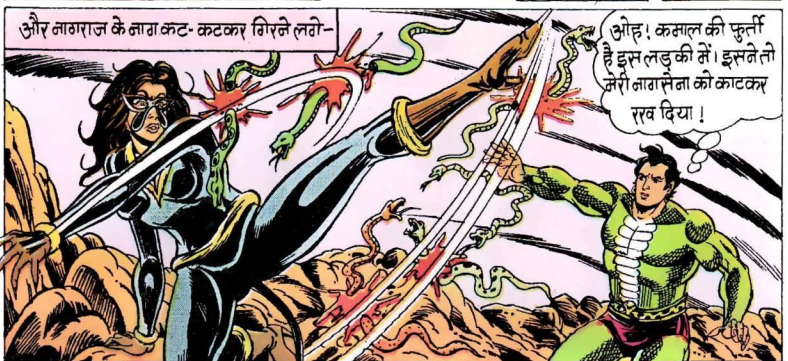
लेकिन मुकाबला जितनी देर तक चलता है, शारीरिक शक्ति का महत्त्व उतना ही बढ़ता जाता है–

ब्लैक कैट में फुर्ती जरूर थी...

... लेकिन नागराज में असंख्य सर्पों का बल शामिल था–

ओह! अब मैं ज्यादा देर तक नहीं टिक पाऊंगी...

...इसलिए अब मुझे हथियार का सहारा लेना पड़ेगा !
शेफाली, एटैक !
इस चीख से सावधान हो गए नागराज को...
...पीछे घूमने में एक पल भी नहीं लगा–
तड़
म्यांऊ !
?
ओह ! इस बिल्ली से तो डायनामाइट बंधा हुआ है ! जो शायद मुझसे टकराते ही फट जाएगा...
...इसलिए मैं इसको अपने शरीर से टकराने नहीं दूंगा ।
नागराज की किस्मत अच्छी थी कि उसका वार खाकर बेहोश हो चुकी बिल्ली, पीठ के बल चट्टानों पर गिरी और डायनामाइट नहीं फटा–
धड़ाक
लेकिन इन कुछ क्षणों ने ब्लैककेट को वह मौका दे दिया, जिसकी उसे तलाश थी–
हिलने की कोशिश मत करना नागराज ! वरना तुम्हारा शरीर सुलगे हुए कोयले की तरह राख कर दूंगी। नमूना देख लो !
ओह ! तो तुम इन हथियारों की बात कर रही थी। ये तो सचमुच पृथ्वी के नहीं लगते !
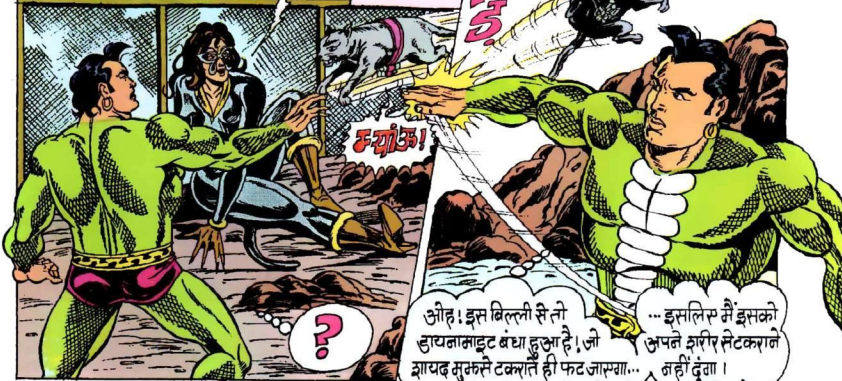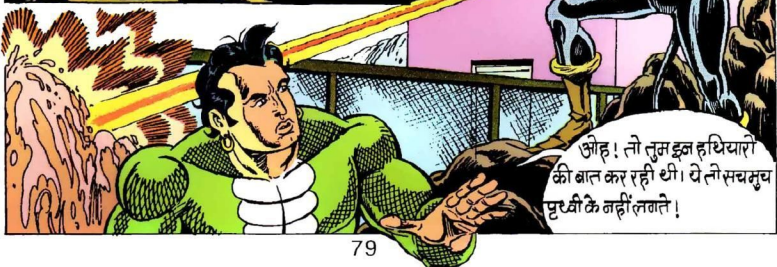
लेकिन इनको पास से देखने के लिए मुझे, तुमको इनसे दूर करना होगा।
अपनी हल्की विष फुंकार द्वारा!
फूऊऊ
नागराज की उस 'हल्की' विष फुंकार ने ही...
...ब्लैक कैट के पैरों को जमीन से उखाड़ दिया-
ये तो गई...
...अब इस 'गन' को देखा जाए! अरे!
यह तो सचमुच किसी अत्याधुनिक तकनीक से बनी हुई लगती है। जैसे... किसी और ग्रह से आई हो!
कहीं ऐसा तो नहीं कि राजनगर में हो रहे इन वाकियातों के पीछे दूसरे ग्रह वालों का हाथ हो! ...
...और वे मेरे कंट्रोल स्टेशन के जरिए वे सिग्नल भेज रहे हों जो राजनगर में तबाही फैला रहे हैं!
मुझे तुरंत ध्रुव को यह बात बताकर और गन दिखाकर अंतरिक्ष वैज्ञानिकों की मदद लेनी चाहिए।
मदद ले लेना! जरूर ले लेना! लेकिन पहले मुझे तुम्हारे दिमाग की तारीफ तो कर लेने दो नागराज!
'इमेज' का अभिवादन स्वीकार करो नागराज!
?

... और उसके साथ-साथ मेरी वे 'शोक संवेदनाएं भी स्वीकार करो, जो मैं तुम्हारे मरने के बाद तुमको नहीं दे पाऊंगा !

तेज हवा के एक झोंके ने नागराज को उठाकर फेंक दिया–

कैंएएएए
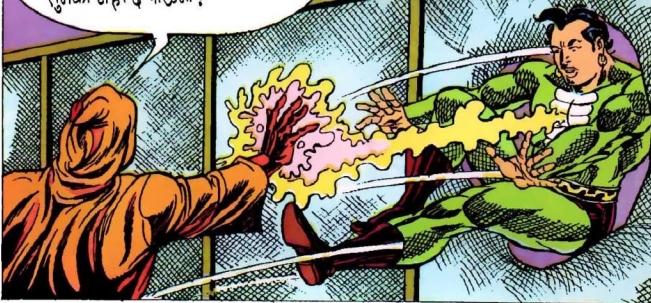
ओह! लेकिन तुम मुझ पर वार क्यों कर रहे हो ? कौन हो तुम ? मुझसे क्या दुश्मनी है तुम्हारी?

हमारी-तुम्हारी कोई व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं है नागराज ...
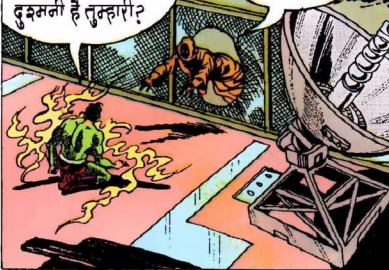
... लेकिन तुम वह जान चुके हो जो तुमको नहीं जानना चाहिए था। दरअसल तुम जो भी समझ रहे हो वह सच है...

... मेरे मालिक, यानी प्लून ग्रह साम्राज्य के प्राणी तुम्हारे इस कंट्रोल-स्टेशन का प्रयोग राजनगर में तबाही फैलाने के लिए कर रहे हैं।

और यह तबाही एक छोटा सा नमूना है।...

हां! और मेरा प्रक्षेपण भी तुम्हारे सेटेलाइट रिसीवर द्वारा ही हो रहा है। मैं ऊर्जा का एक रूप हूं और मेरी शक्तियां भी ऊर्जा से ही चलती हैं!
जैसे मेरी यह किरण तुम्हारे ऊपर का वायुदाब बढ़ा देगी! और इतना बढ़ा देगी कि तुम खड़े भी न हो पाओगे!
ओह! सचमुच मेरे चारों तरफ की हवा भारी हो रही है! मैं खड़ा नहीं हो पा रहा हूं।
मुझे··· मुझे सांस लेने में भी दिक्कत हो रही है···
इधर नागराज 'इमेज' से जूझ रहा था···
···और दूसरी तरफ ध्रुव और चंडिका 'वीडियो-इफैक्ट' का मुकाबला कर रहे थे—
··· और साथ ही साथ एक दूसरा फाइटर प्लेन भी मेरी तरफ बढ़ रहा है···
··· मैं दोनों से एक साथ नहीं निबट सकती···
···अब एक न एक तो मुझको
ओह! मेरा निशाना चूक गया! यानी··· यानी अब···
··· अब ये मुझ पर मिसाइल से हमला करेगा···
··· ओह! थैंक्यू ध्रुव!
घबराओ मत चंडिका! अब सिर्फ दो प्लेन बचे हैं···

...जिनमें से एक तो गया। अब दूसरा वार आखिरी वार होगा...
...नहीं, ध्रुव! इस आखिरी फाइटर प्लेन को मत मार गिराना...
...क्योंकि इस प्लेन को मार गिराते ही गेम खत्म हो जाएगा। सब-कुछ गायब हो जाएगा। ये 'फ्लाईंग एंटी एयर क्राफ्ट गन' भी!
...और हम इतनी ऊंचाई से सीधे जमीन पर जा गिरेंगे!
ओह। यानी ये प्लेन राजनगर पर बम गिराता रहेगा...
...और चुपचाप दर्शक बने हम देखते रहेंगे!
एक तरफ राजनगर जल रहा था...
...और दूसरी तरफ नागराज, राजनगर को बचाने की जी-तोड़ कोशिश कर रहा था—
मुझे एक-एक इंच खिसकने के लिए भी अपनी पूरी नागशक्ति लगानी पड़ रही है...
...लेकिन मुझे डिश एंटीना तक पहुंचना ही होगा...
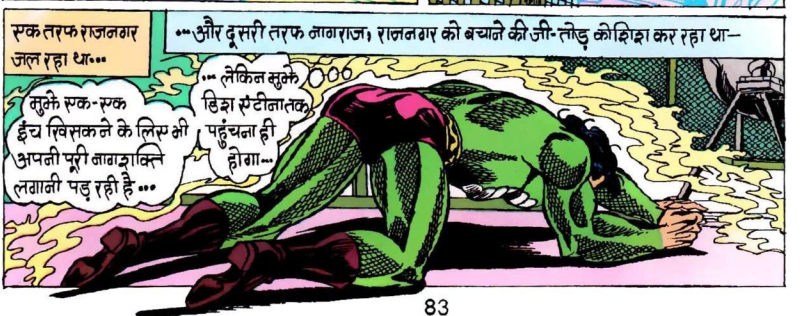
... ताकि मैं उसको नष्ट करके, उस तक आने वाले सिग्नलों को नष्ट कर सकूं।

ओह! तो तू अभी भी सरक सकता है। यानी मुझे हवा का दबाव और बढ़ाना पड़ेगा।

ओह! अब तो सांस लेना भी असंभव हो रहा है ... लेकिन अगर मैंने इस वक्त हिम्मत हार दी तो न तो मैं बचूंगा और न ही राजनगर।

इसलिए मुझे हर हाल में...
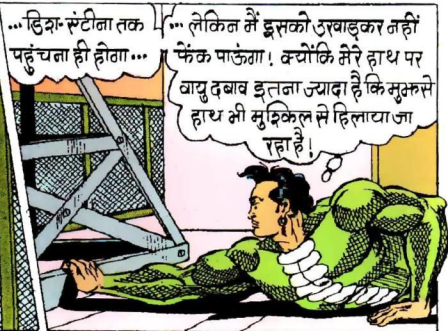
... डिश-एंटीना तक पहुंचना ही होगा...

... लेकिन मैं इसको उखाड़कर नहीं फेंक पाऊंगा! क्योंकि मेरे हाथ पर वायु दबाव इतना ज्यादा है कि मुझसे हाथ भी मुश्किल से हिलाया जा रहा है!

अब एक ही रास्ता है। मेरी सर्प सेना...

... वह डिश एंटीना के नीचे की जमीन को खोदकर इतना पोला कर देगी कि यह एंटीना अपने-आप गिर जाए...

अरे! यह क्या? ...

... वायु दबाव इतना अधिक है कि सर्प-सेना मेरे शरीर से बाहर ही नहीं आ पा रही है! ...

... यानी अब कोई रास्ता नहीं है!

लेकिन रास्ता खुद चलकर नागराज के पास आ रहा था—

नागराज पर हमला करने वाली बिल्ली को होश आ गया था! और वह अपनी मालकिन का आदेश अब तक भूली नहीं थी—

नागराज की निगाहें तुरन्त आवाज की तरफ घूम गईं-
म्यांऊं
यह बिल्ली! यह होश में आ गई। और यह फिर से मुझ पर हमला कर रही है!
यानी वायु दबाव मुझ तक ही सीमित है। वर्ना यह बिल्ली ऐसी छलांग न लगा पाती।
अगर मैं अपना पैर हिलाकर, इस बिल्ली को सही जगह पर एक सही किक लगा सकूं...
... तो यह बिल्ली ही मेरा वह हथियार बन जाएगी, जो इस डिश एंटीना को नष्ट कर सके!...
नागराज की किक एकदम सटीक थी-
तड़ाक
बिल्ली हवा में उड़ती हुई
...डिश एंटीना के अंदर जा गिरी-
और अगले ही पल एक जोरदार धमाका हुआ-
डिश एंटीना के टुकड़े चारों तरफ हवा में उड़ने लगे-
धड़ाम
स्पेस-शिप से आने वाले सिग्नलों का संपर्क टूट गया-
और संपर्क के टूटते ही...
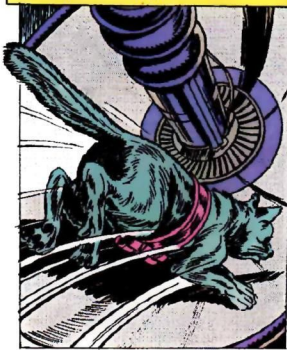
'इमेज' अपने-आप गायब होने लगा—
और नागराज के ऊपर बना हुआ वायुदबाव भी गायब हो गया—
वाह! यह झिल्ली एकदम सही समय पर काम आ गई! वर्ना इस वक्त इसके बजाय मैं गायब हो गया होता।
लेकिन गायब होने वाली अभी और वस्तुएं भी थीं—
चंडिका! इस स्टीयर क्राफ्ट गन को उस ऊंची इमारत के पास ले चलो। हम वहां से फाइटर प्लेन को नष्ट करने की कोशिश करेंगे!
ताकि इसके नष्ट होने से गेम खत्म होने की स्थिति में हम छत पर कूद कर बच...
ओह यह क्या? गन गायब हो गई है। प्लेन भी गायब हो गया है।
'वीडियो इफैक्ट' एकाएक खत्म हो गया है ध्रुव! अब हमको नीचे गिरकर मरने से कोई नहीं बचा सकता!
लेकिन ध्रुव और चंडिका उस द्वार पर ध्यान नहीं दे रहे थे...
... जो ठीक उन दोनों के पैर के नीचे खुल रहा था—
यह धनंजय द्वारा भेजा गया स्वर्ण नगरी का प्रवेश द्वार था—

और उस रहस्यमय यान पर-
यह क्या हुआ नंबर टू? सारी स्क्रीनें एकाएक साफ कैसे हो गईं?
कंट्रोल स्टेशन का डिश एंटीना नष्ट हो गया है, नंबर वन!...
...और उसके नष्ट होने से पृथ्वी से हमारा पूरा संपर्क खत्म हो गया है।
ओह! यानी... हमारा अब तक का सोचा हुआ सारा प्लान मिट्टी में मिल गया...
... अब एक ही रास्ता है! हमको क्रूटू लोगों तक खबर पहुंचने से पहले इस ग्रह पर कब्जा करना होगा।...
... और उसके लिए हमको पृथ्वी पर से इस मानव नाम के कीड़े को हटाना पड़ेगा...
... 'विखंडन लहर' को छोड़ने की तैयारी करो। वह लहर इन मानवों के शरीरों को अणुओं में बदल देगी!
और समुद्र तल में बसी स्वर्ण नगरी में-
शुभागमन ध्रुव!

धनंजय! आज तो तुमने हमारी जान बचा ली!
डॉल्फिन से तुम्हारी खबर मिलते ही मैं तुम्हारी समस्या के बारे में छान-बीन करने जुट गया था। और जब जवाब मिल गया, तो मैंने तुमको ढूंढ़ना शुरू कर दिया...
... जवाब मिल गया! क्या है, जवाब?
इधर आओ!
इस सुदूर-दर्शन पर देखो!
यह स्पेस शिप है, राजनगर में हो रही तबाही की जड़! ये पृथ्वी पर जो किरण भेज रहे थे, मैंने उसी के द्वारा इनको पकड़ा है!
किसकी है यह स्पेस शिप?
यह शिप प्लून साम्राज्य की है। और इसको मैं इसलिए पहचान गया, क्योंकि हमारे ऐतिहासिक संग्रहालय में इनका भी उल्लेख है। ये पहले पृथ्वी पर आ चुके हैं...
... राक्षसों यानी रक्ष जाति का साथ देने के लिए। लेकिन उस बार हमने इन्हें मार भगाया था...
धनंजय, ध्रुव को प्लून और क्रूद्ध साम्राज्यों की दुश्मनी के बारे में बताता चला गया-
लेकिन अभी इनको कैसे रोकोगे? तुम लोगों के पास हथियार तो हैं ही नहीं!
हथियार हैं, ध्रुव!... लेकिन हम उनका प्रयोग नहीं करते।
क्यों?

... क्योंकि इनका प्रयोग महाघातक होता है। एक बार में पूरा ग्रह तक नष्ट हो सकता है!...
... लेकिन अब हमको अपने आयुधों का प्रयोग करना ही पड़ेगा, धरती की रक्षा के लिए!
ये देखो! ये है वह अस्त्र जिसको तुम ब्रह्मास्त्र के नाम से जानते हो!
इस एक शस्त्र का धमाका ही इस पूरे विशालकाय यान को जीवन रहित कर देगा!
तब तो अंतरिक्ष में घूम रही हमारी सारी सेटेलाइटें भी नष्ट हो जाएंगी...!
और कुछ ही पलों बाद-अंतरिक्ष में एक तेज रोशनी चमकी-
ब्रह्मास्त्र से निकली विकिरण की किरणें, स्पेस शिप की दीवारों को चीरती हुई, अन्दर धा गईं-
नहीं ध्रुव! यह प्रक्षेपास्त्र ऐसी विकिरण किरणें छोड़ता है, जो सिर्फ जीवित कोशिकाओं पर ही असर करती हैं।...
... और इस वक्त अंतरिक्ष में इन प्लून प्राणियों के अतिरिक्त और कोई जीवित वस्तु नहीं है।
और जीवित प्राणियों की कोशिकाएं गलकर बहने लगीं-
पलक झपकते ही यान जीवन रहित हो गया। किसी भी बटन को दबाने के लिए कोई उंगली बची ही नहीं थी-

राजनगर अब सुरक्षित था-
भगवान का शुक्र है कि तुम और चंडिका सही वक्त पर आ गए ध्रुव! वर्ना पूरा राजनगर ध्वस्त हो चुका होता!
इसमें मुझसे बड़ा हाथ तो नागराज का है। अगर ये कंट्रोल-टॉवर को नष्ट न करता तो हम भी कुछ नहीं कर सकते थे, मेयर साहब!
लेकिन नागराज, तुम एकाएक आ कहां से गए? तुमको पता कैसे चला कि राजनगर में कुछ गड़बड़ हो रही है?
क्यों बच्चू फंस गये न? अब क्या बताओगे?
व... वो... मैं... मैं... वहां से...
ये आपलोग नागराज से बाद में पूछते रहिएगा मेयर साहब...
...फिलहाल मैं राजनगर के पुनर्निर्माण के लिए एक करोड़ का चेक देना चाहती हूं।... कृपया स्वीकार करें।

समाप्त
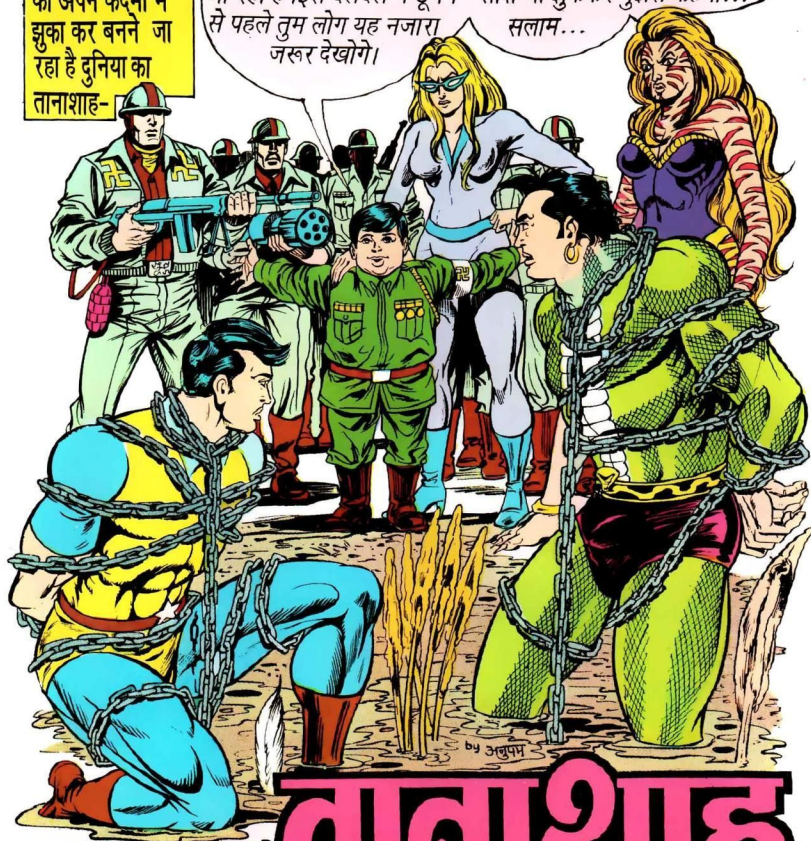
लेकिन ये शक्ति उसमें आई कहां से? उसे टैंक और विमान जैसे हथियार मिले कहां से? और इशारों पर काम करने वाली सेना उसे मिली कहां से? कहीं पर छुपा है कोई बहुत बड़ा रहस्य! किसी की आत्मा में दबा रहस्य! और इसी रहस्य की पर्तें दर पर्तें उधेड़ने आ रहा है- राज कॉमिक्स में नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव का रोमांचक टू इन वन विशेषांक

हर युग में मानवों ने देवताओं की मुसीबत में सहायता की है। त्रेता में दशरथ और कैकयी ने, द्वापर में अर्जुन ने! कलियुग में भी देवताओं के सामने एक भीषण संकट उत्पन्न हो गया है...
...और इस बार देवताओं ने अपनी मदद के लिए तुम दोनों को पुकारा है।...
...विनाश की इस घड़ी को अगर कोई टाल सकता है तो सिर्फ तुम दोनों मानव! वर्ना इस कलियुग के साथ सिर्फ एक 'कल्प' की नहीं बल्कि सृष्टि की ही समाप्ति हो जाएगी! और ब्रह्माण्ड में न रहेगा सतयुग न त्रेतायुग, न द्वापर युग! हमेशा के लिए ब्रह्माण्ड में व्याप्त हो जाएगा...
यह विशेषांक मई 1999 में प्रकाशित होगा
कलियुग
पृष्ठ संख्या :96 मूल्य :25
इस बार संघर्ष सिर्फ मानवता या पृथ्वी को बचाने के लिए नहीं, बल्कि देवताओं और सृष्टि को बचाने के लिए है। दुश्मन प्रचण्ड शक्तिशाली और भीषण राक्षसी शक्तियां हैं और दांव पर लगा है पूरे ब्रह्माण्ड का भविष्य!
राज कॉमिक्स का एक युग परिवर्तनकारी विशेषांक

इसको क्यों बचा रहे हो परमाणु? यही 'मुखौटा' है इस शहर के विनाश का कारण।
इस शख्स की जान का रखवाला परमाणु है, नागराज! इसको नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए...
चाहे दिल्ली और महानगर पर टूट पड़े...
पृष्ठ संख्याः 96 मूल्य:25/-
by अनुपम Vinod
मई 2000 में उपलब्ध
कयामत
राज कॉमिक्स में नागराज और परमाणु का टू इन वन कॉमिक विशेषांक

A.H.W. TIGER SERIES
राज कॉमिक्स के सुपर सितारे